सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-27 अंक-17 7 से 21 सितम्बर, 2012 मुख्य संपादक - कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती मूल्य : 2 रुपये

26 सितम्बर, 1893 9 सितम्बर, 1976

कॉमरेड माओ-त्से तुंग लाल सलाम

'' पूंजीवादी देशों के सर्वहारा वर्ग की पार्टी का यह कर्तव्य हो जाता है कि वह दीर्घकालीन कानूनी संघर्ष के जरिए मजदूरों को शिक्षित करे तथा अपनी शक्ति का संचय करे और पूंजीवाद का तख्ता अन्तिम रूप से उखाड़ फेंकने के लिए तैयारी करे। उक्त देशों में मसला यह है कि दीर्घकाल तक कानूनी संघर्ष चलाया जाए, पार्लियामेन्ट को एक मंच के तौर पर इस्तेमाल किया जाए, आर्थिक व राजनीतिक हड़तालें की जाएं, ट्रेड यूनियनों को संगठित किया जाए और मजदूरों को शिक्षित किया जाए।.... बगावत और युद्ध तब तक नहीं छेड़ना चाहिए जब तक पूंजीपति वर्ग वास्तव में असहाय नहीं हो जाता, जब तक सर्वहारा वर्ग का बहुसंख्यक जन-समुदाय सशस्त्र विद्रोह करने और युद्ध चलाने के लिए संकल्पबद्ध नहीं हो जाता, तथा जब तक किसान जन-समुदाय स्वेच्छा से सर्वहारा वर्ग को मदद नहीं देता। ''

- माओ-त्से तुंग

संकलित रचनाएं, खण्ड 2 पृ. 386-387

भ्रष्टाचार में आकण्ठ डुबी हुई है केन्द्र सरकार

18 अगस्त को जारी एक बयान में एस.यू.सी.आई. (कम्युनिस्ट) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने कहा :

1लाख 76 हजार करोड़ रुपये के टूजी घोटाले के बाद कोयला खदान आवंटन को लेकर 1लाख 86 हजार करोड़ रुपये की चोरी या सरकारी खजाने को पहुंचे नुकसान की घटना ने यह साफ जाहिर कर दिया है कि केन्द्र की कांग्रेस-नीत यूपीए सरकार भ्रष्टाचार में आकण्ठ डुबी हुई है। खबर छपी है कि निजी कम्पनियों और कुछ सरकारी कम्पनियों को अतिरिक्त सुविधाएं देने के घिनौने अपराध में कांग्रेस ही नहीं बल्कि बीजेपी व सीपीआई(एम) भी संलिप्त हैं। दरअसल, एकाधिकारी पूंजीपतियों की ताबेदार तमाम राष्ट्रीय व क्षेत्रीय पार्टियां जो जब भी सरकार में रहती हैं तो भ्रष्टाचार में मदद देकर भारी मात्रा में पैसा बटोरती हैं। एक तरफ बेरहम पूंजीवादी शोषण जनता को कंगाल बना डाल रहा है और दूसरी तरफ ये वोटबाज पार्टियां सरकार में बैठ कर अति तत्परता के साथ सरकारी खजाने का रुपया लूट रही हैं जिसके फलस्वरूप सरकारी खजाने के घाटे का परिमाण बढ़ कर बहुत ज्यादा हो गया है। इस संकट का सारा बोझ फिर सरकार मेहनतकश जनता पर डाल देती है। घाटा पूरा करने के नाम पर सरकार तरह-तरह के टैक्स बढ़ा रही है, महंगाई बढ़ा रही है, सामाजिक व कल्याणकारी खाते में बजट आवंटन में कटौती कर रही है, जनता को दी जाने वाली सब्सिडी वापस ले रही है-जिसके फलस्वरूप दुर्दशाग्रस्त लोगों का जीना वास्तव में ही दुश्वार हो गया है।

यह बात आज दिन के उजाले की तरह साफ है कि हमारे देश के असंख्य स्वतंत्रता सेनानियों व शहीदों का सपना चकनाचूर कर मौजूदा पूंजीवादी शासन व्यवस्था देश को आर्थिक-राजनीतिक-सामाजिक-सांस्कृतिक-नैतिक चौतरफा तबाही की तरफ धकेल रही है। इस हालत में आज जल्द से जल्द मजदूर आन्दोलन और जनवादी आन्दोलन गठित करना निहायत जरूरी हो गया है। तमाम संकटों की वजह मौजूदा पूंजीवादी व्यवस्था को उखाड़ फेंकने के मूल लक्ष्य के परिपूरक बनाते हुए ही इन आन्दोलनों को गठित करना होगा। सही मायने में तहेदिल से इन आन्दोलनों को आगे बढ़ाने के लिए जहाँ हम आम आदमी से आगे आने का अनुरोध करते हैं, वहीं साथ ही साथ हम माँग करते हैं कि आर्थिक घोटालों में जो भी संलिप्त हों उन्हें यह न देखकर कि किस पार्टी से जुड़े हुए हैं, सभी को सख्त सजा दी जाए।

कोर्ट ने आरएसएस-बीजेपी के लोगों को गुजरात में सुनियोजित नरसंहार का दोषी ठहराया

वीभत्स गुजरात जनसंहार की जाँच के लिए स्पेशल इन्वेस्टीगेशन टीम (एसआईटी) का गठन किया गया था जहाँ अल्पसंख्यक समुदाय के सैकड़ों लोगों को मूक दर्शक बने पुलिस-प्रशासन के सामने बेरहमी से मौत के घाट उतार दिया गया था। पिछले साल एसआईटी का एक दूसरा ही चेहरा सामने आया था जब इसने गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी को क्लीन चिट दी थी जबकि सभी जानते हैं कि वही इस घिनौने अपराध का मुख्य सूत्रधार थे। सरकार और राज्य प्रशासन की तरफ से तथ्यों को छिपाने, अपराधियों को बचाने, साक्ष्यों को दबाने का हर संभव प्रयास किया गया। धमकी या पैसे का लालच देकर इस पाश्विक हैवानियत के चश्मदीद गवाहों पर दबाव डाला गया कि या तो वे पीछे हट जाएं या अपने बयानों को बदल दें। इस योजनाबद्ध हिंसा को अंजाम देने में मोदी और उसके सलाहकारों आरएसएस-बीजेपी की मिलीभगत की पुष्टि करने के लिए जिन पुलिस अफसरों और अन्य लोगों ने कोर्ट के सामने गवाही देने का साहस किया उन्हें हिरासत में ले लिया गया, प्रताड़ित किया गया और हर संभव तरीके से मानसिक यातनाएं दी गई। लेकिन इन सब के बावजूद कुछ मुँह बोलते तथ्यों को छिपा कर नहीं रखा जा सका। एक महत्वपूर्ण फैसले में अहमदाबाद की विशेष अदालत ने पूर्व मंत्री और मौजूदा बीजेपी विधायक माया कोडनानी के साथ-साथ बजरंग दल (घोर हिन्दू साम्प्रदायिक संघ परिवार का एक घटक) के नेता बाबू बजरंगी और अन्य 30 को दोषी करार देते हुए सजा सुनाई है। इन सभी को नरोदा पाटिया में पोस्ट-गोधरा खूरेज़ी के सबसे बड़े हत्याकाण्ड का दोषी पाया गया। साथ ही साथ इन्हें हत्या, अपराधिक षड़यन्त्र, दंगे, आगजनी, हत्या के प्रयास, गैरकानूनी जमावड़ा, धार्मिक स्थलों को निशाना बनाते हुए धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाने और साम्प्रदायिक नफरत भड़काने का भी दोषी पाया गया है। एक आदमी को बलात्कार का भी दोषी पाया गया है। साक्ष्य इतने साफ हैं कि मोदी सरकार को भी खुद को इस फैसले से अलग रखने के लिए बदहवास प्रयास करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

तथापि, इन रहस्योद्घाटनों के दूरगामी परिणाम होंगे। यह साफ तौर से दर्शाता है कि किस प्रकार आरएसएस-बीजेपी की छत्रछाया में पल रहे हिन्दुत्व के कट्टरपंथियों ने सिर्फ यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे सत्ता में आ सकें और सत्ता में बने रह सकें ऐसे एक संगठित अपराध को अंजाम दिया है जो मानवजाति के इतिहास में भी विरला और विशेषकर आजादी के बाद के भारत के इतिहास में भी अज्ञात है। इसी उद्देश्य के साथ वे मुस्लिम अल्पसंख्यकों के खिलाफ नफरत अभियान निरन्तर जारी रखते हैं, हर संभव तरीके से उन्हें प्रताड़ित करते रहते हैं, अक्सर उनके खिलाफ प्राणघातक हिंसा का षड़यंत्र रचते हैं, बाबरी मस्जिद जैसे एक ऐतिहासिक स्मारक को ध्वस्त कर दिया और इस प्रकार वे देश का साम्प्रदायिक तौर पर ध्रुवीकरण करने का प्रयास करते हैं ताकि हिन्दू वोट बटोर सकें। ये कट्टरपंथी इतने विवेकशून्य हैं कि छोटे बच्चों और महिलाओं को भी जिन्दा जलाने में इन्हें कोई हिचक नहीं होती है। जैसा कि गुजरात हत्याकाण्ड के दौरान देखा गया। यह सारी कवायद देश में साम्प्रदायिक तौर पर उत्तेजित माहौल बनाए रखने के लिए, एक तबके के लोगों को दूसरे तबके के खिलाफ खड़ा कर देने के लिए और इस प्रकार लोगों में फूट डाल देने के लिए है ताकि धार्मिक या अन्य प्रतिबद्धताओं का फर्क किए बगैर करोड़ों शोषित-पीड़ितों के खून का आखिरी कतरा तक निचोड़ लेने वाले बेरहम पूँजीवादी शोषण के खिलाफ उठने वाले एकजुट जनआन्दोलन की किसी भी संभावित अग्रगति को रोका जा सके।

इस संदर्भ में यह भी जोड़ा जा सकता है कि चूँकि निश्चित सामाजिक-ऐतिहासिक कारणों से हमारा स्वाधीनता आन्दोलन गैर समझौतावादी धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण के साथ विकसित नहीं हुआ बल्कि धार्मिक नजरिए के साथ समझौता करके विकसित हुआ था। जिसके चलते समाज के वांछित जनवादीकरण का काम अधूरा ही रह गया। परिणामस्वरूप हालांकि भारत राजनैतिक तौर से एक राष्ट्र के रूप में उभर सका लेकिन सांस्कृतिक तौर से भारतीय जनता धर्म, जात-पात, सम्प्रदाय, प्रजातीय आधार और भाषा के आधार पर बंटी ही रह गई। जहाँ शासक एकाधिकारी पूँजीपति तमाम तरह की विभाजनकारी मानसिकताओं को हवा देकर इन विभेदों का दोहन करते हैं ताकि क्षयोन्मुख मरणासन्न भ्रष्ट शासन के जीवन की घड़ियों को लम्बा किया जा सके, वहीं बुर्जुआ-पेटीबुर्जुआ पार्टियाँ अपने वोट बैंक तैयार करने के लिए विभिन्न प्रजातीय-साम्प्रदायिक मनोभावों को भड़का रही हैं। यही वजह है कि नितांत साम्प्रदायिक

(शेष पृष्ठ 5 पर)

कम्युनिस्ट आचरण विधि

(अन्तिम किस्त)

पार्टी में इन चर्चाओं और आलोचनाओं के भी कुछ मानदण्ड, प्रक्रिया और पद्धति होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, कौन नेता और कार्यकर्ता किस बात की, किस स्तर पर और वह भी किस ढंग से चर्चा कर सकता है–इस बात का हमेशा ख्याल रखना होगा। यह समझ होनी चाहिए कि हर कॉमरेड अपने स्तर के और नीचे के स्तर के किसी कॉमरेड के बारे में कोई आलोचना उपयुक्त पार्टी-बॉडी में खुले तौर पर कर सकता है। लेकिन उन सभी व्यक्तिगत सवालों या सांगठनिक मामलों को जो सभी कॉमरेडों के जानने के विषय नहीं हैं, उनके बारे में सभी कॉमरेड अपने स्तर के और अपने से उच्चतर स्तर के कॉमरेडों से ही चर्चा-बहस कर सकते हैं। किन्तु यह स्पष्ट रहना चाहिए कि अपने स्तर के कॉमरेड की आलोचना या उसके बारे में चर्चा अपने स्तर के या अपने से उच्चतर स्तर के कॉमरेड से ही की जा सकती है और किसी हालत में भी उन्हें इसे अपने से नीचे स्तर के कॉमरेडों के सामने नहीं करना चाहिए। लेकिन अपने से उच्च स्तर के किसी कॉमरेड के बारे में आलोचना केवल किसी उच्च स्तर की पार्टी बॉडी में ही की जा सकती है। एकमात्र वैचारिक एवं सैद्धान्तिक विषयों को हर कॉमरेड के सामने हर कोई चर्चा कर सकता है। कॉमरेडों को पता होना चाहिए कि पार्टी में शुरू से ही इन नियमों और आचरण-विधियों को एक कायदे-कानून (रूल्स) की तरह ऊपर से थोपने की कोशिश कभी नहीं की गई है बल्कि हमारे पार्टी-जीवन के संघर्ष से ही ये सब नियम और आचरण-विधियाँ धीरे-धीरे प्रचलन (प्रैक्टिस) में आई हैं, तैयार हुई हैं। उन्हें मन-मुआफिक तैयार नहीं किया गया है।

अत: हम देखते हैं कि इन समस्याओं व मामलों के दो पहलू हैं। एक है–कॉमरेडों का व्यक्तिगत किस्म का अथवा गोपनीय मामला या समस्या और दूसरा है इन तमाम व्यक्तिगत मामलों या समस्याओं से उत्पन्न तमाम आम दिशा-निर्देशनों के बारे में। इस दूसरे पहलू की सबके सामने चर्चा करनी चाहिए ताकि सबको शिक्षा मिले। लेकिन किसी भी हालत में अपने से उच्च स्तर के यानी नेतृत्वकारी स्तर के कॉमरेड की व्यक्तिगत या सांगठनिक समस्याओं की, जिन्हें पार्टी-हित में गोपनीय रखना उचित है, अपने से नीचे के स्तर के कॉमरेडों के बीच चर्चा नहीं कर सकेंगे। भले ही उपयुक्त पार्टी कमेटियों की मार्फत ऐसी किसी समस्या या मामले के बारे में किसी को जानकारी हो जाए तो भी ऐसी बातों को पार्टी-हित में वह अपने तक ही सीमित रखेगा। परन्तु नेताओं के आम रुचिगत सांस्कृतिक स्तर, राजनीतिक आचरण-व्यवहार सम्बन्धी किसी भी कमी-खामी के बारे में अवश्य ही कॉमरेड लोग पार्टी में खुले मन से और निर्वैयक्तिक ढंग से आलोचना कर सकते हैं। लेकिन सदा यह जरूर याद रखें कि यह सब आलोचना सम्बन्धित नेता के सामने भी ठीक उसी तरह करनी चाहिए जिस तरह अन्यत्र करते हैं। इसी तरह कोई कॉमरेड अपने से निचले स्तर के किसी कॉमरेड की भी उसकी गैर-मौजूदगी में आलोचना कर सकता है लेकिन उसके सामने भी वैसे ही करनी चाहिए और इन दोनों मामलों में ही आलोचना के जो आम पहलू हैं यानी जो सैद्धान्तिक व सांगठनिक आम पहलू है उन पर निश्चय ही सभी के सामने चर्चा हो सकती है। किन्तु केन्द्रीय कमेटी पार्टी के सभी कार्यकर्ताओं और नेताओं के बारे में चर्चा व आलोचना कर सकती है।

आलोचना व चर्चा करते समय उपरोक्त नियमों के अलावा और भी कुछ रीति-नीतियों को मानना होगा। पहले तो ऐसी चर्चाओं को चलाते वक्त यह देखना चाहिए कि कोई आलोचना पार्टी के हित में है या नहीं। दूसरे, यह कि किसी दूसरे कॉमरेड की आलोचना करते समय यह दृष्टिकोण होना चाहिए कि सदा पहले उसके गुणों को यथोचित ध्यान में रखा जाए और फिर यह भी विचार करके देखना चाहिए कि उसमें गुण के सापेक्ष अवगुण व कमी-दोष किस हद तक हैं। तीसरा है, किसी कॉमरेड के बारे में कोई धारणा बनाने और उसे व्यक्त करने से पहले पार्टी के साथ चर्चा करके पूरी तरह जाँच करनी होगी कि किसी की व्यक्तिगत धारणा (इम्प्रैशन) पार्टी की राय से मेल खाती है या नहीं। ऐसा हो सकता है कि कोई कॉमरेड एक राय बना कर मन-ही-मन में उसे पोषित करता रहे जिसका पार्टी की राय से बिल्कुल कोई मेल नहीं है। चर्चा के दौरान अगर यह पाया जाता है कि किसी का अपना मत उस विशेष बात पर पार्टी मत से मेल नहीं खाता है तो उसे खुशी-खुशी पार्टी के मत को ही मानना होगा। क्योंकि अगर कोई साथी किसी बात के बारे में कोई धारणा बना भी लेता है तो क्या यह महज अपनी आत्म-सन्तुष्टि के लिए बनाता है या पार्टी व क्रान्ति के समग्र हित में बनाता है? उसे इस बारे में इस तरह से सोचना होगा कि पार्टी के मत से मेल न खाने वाला अपना कोई विचार लेकर अगर चलेगा तो उसका नतीजा खतरनाक होगा। तब वह इस बात का कैसे पता लगाए कि उस खास बात के बारे में उसकी जो धारणा (इम्प्रैशन) है वह ठीक है या गलत? अपने विचार को चर्चाओं के जरिये पार्टी मत के साथ संघर्ष यानी द्वन्द्व-संघात में लाकर और परीक्षा में डाल कर ही वह इस बात का पता लगा सकता है कि उसका यह विचार ठीक है या गलत? इस द्वन्द्व-संघर्ष से या तो पार्टी का मत-परिवर्तन होगा, नहीं तो उस कॉमरेड की अपनी धारणा (इम्प्रैशन) बदलेगी या फिर एक पूर्णत: नई धारणा की उत्पत्ति होगी। इन्हीं तीन अवस्थाओं में से एक जरूर होगी। याद रखें, यहाँ पर किसी अनिर्णय (इनडिसिज़न) की स्थिति की कोई गुंजाइश नहीं है। अगर कोई अपनी मर्जी से सोच लेता है कि चूँकि उसकी कोई खास धारणा देखने में न तो पार्टी के समग्र कार्यकलाप में कोई अड़चन पैदा कर रही है और न ही यह उसे पार्टी के रोजमर्रे के संघर्षों में हिस्सा लेने से रोक रही है, इसलिए वह पार्टी से चर्चा करके इसे हल करने की कोई खास जरूरत महसूस नहीं करता है तो यह भी एक गम्भीर गलती होगी।

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद हमें सिखाता है कि कोई भी परिघटना या सत्ता एक जगह स्थिर या अपरिवर्तनीय नहीं है। तब उसके वे विचार या अवधारणाएं क्या एक जगह ठहरी रहेंगी? नहीं, हरगिज नहीं। अगर वह उस धारणा को दबा कर रखना चाहे तो भी वह दबी नहीं रहेगी। जैसे घुन लकड़ी को खा जाता है उसी तरह ये विचार व धारणाएं उसके मन की शान्ति को धीरे-धीरे खा जाएंगी। उसका चिन्तन दूषित हो जाएगा और वह इन्हें छुपा या दबा नहीं पाएगा क्योंकि मन बड़ी अजीब चीज है। मन कब किस तरह काम करता है–यह साधारण आदमियों की समझ से परे है। अगर ऐसा है कि कोई अपने मन में कोई धारणा लेकर चलता है और पार्टी से चर्चा या सलाह करने से बचता है तो उसकी सम्पूर्ण चिन्तन प्रक्रिया एवं धारणाओं पर भी इसकी प्रतिक्रिया होगी ही–यह अवश्यम्भावी है, अटल है। अत: मन को बेलगाम न होने दें। छोटी-छोटी बातों को लेकर सोचने-विचारने के बारे में मन को इस तरह से बेलगाम छोड़ देने से कितने ही क्षमतावान क्रान्तिकारी चरित्र बरबाद हो गए और अभी भी होते जा रहे हैं। अत: किसी भी धारणा या बात को, भले ही वह कितनी भी नगण्य क्यों न दिखाई दे, मन में अनसुलझी नहीं रहने दें और कोई बात सही है या गलत है इसको जांचने की सबसे भरोसे लायक कसौटी पार्टी है क्योंकि पार्टी का मत महज किसी की व्यक्तिगत धारणा से नहीं बना है। पार्टी के सभी कॉमरेडों के मतों के द्वन्द्व-संघर्ष और घात-प्रतिघात (इण्ट्रैक्शन) से जो सामूहिक अनुभव प्राप्त हुआ है, उसी से पार्टी का मत उभर कर आया है।

अत: एक बात कॉमरेडों के लिए अब तक साफ हो गई होगी कि उन्हें दोहरा संघर्ष चलाना है। एक है बाहर का आम राजनीतिक-सामाजिक संघर्ष और दूसरा है कॉमरेड का अपने आप से यानी अन्दरूनी संघर्ष। मजदूर वर्ग का जो संघर्ष बाहर चल रहा है उसके साथ पार्टी के इस अन्दरूनी संघर्ष को ठीक तरह से जोड़ना होगा। पार्टी को 'एक आदमी' की तरह बनाने के संघर्ष को हमें पार्टी के रोजमर्रे के राजनीतिक संघर्ष यानी मजदूर वर्ग के संग्राम के साथ मिलाना होगा। इसलिए जब कभी कोई कॉमरेड सवाल करता है तो इसके दो पहलू होते हैं। एक है उसके सवाल का राजनीतिक या सैद्धान्तिक ज्ञान का पहलू और दूसरा है प्रश्नकर्ता के आचरण का पहलू। इन दोनों पहलुओं में से किसी भी पहलू को कभी गौण नहीं समझना चाहिए। हर कॉमरेड को बड़ी-बड़ी बातें कहने और करने का अधिकार है क्योंकि हम तो चाहते हैं कि हर कॉमरेड ज्यादा से ज्यादा बड़ा बने, विकसित हो और नेताओं की संख्या बढ़े क्योंकि सिर्फ तभी तो हम इस विराट समस्या और अन्य ढेर सारी समस्याओं को हल कर पाएंगे। मैं आजकल कई बार एक बात कहता हूँ कि पार्टी बढ़ रही है परन्तु नेताओं की संख्या नहीं बढ़ रही है। लेकिन कोई नेता बनना चाहता है–महज इसलिए ही हम उसके हाथ में नेतृत्व कैसे सौंप सकते हैं। जब तक वह इस कसौटी पर खरा नहीं उतर चुका हो और पार्टी इस बात से सहमत न हो कि वह खुद मर सकता है परन्तु पार्टी को मरने नहीं देगा, तब तक पार्टी उसके हाथ में नेतृत्व भला कैसे सौंप सकती है। ऐसे बहुत से कॉमरेड हैं जो अपने आपको नेतृत्व देने के बिल्कुल लायक मानते हैं परन्तु वे खुद ऐसा मानते या सोचते हैं–क्या इसी से वे लायक हैं या नहीं–इसकी योग्यता प्रमाणित हो जाती है? अपनी जिन्दगी में इस लायक होने का उन्होंने प्रमाण कब ओर कितना दिया–क्या कभी उन्होंने इस पर भी विचार किया है? उन्होंने संगठन को अपने हाथों से कितना तैयार किया है? उन्होंने पार्टी के काम का कितना संचालन किया है? पार्टी को कितना मजबूत किया है? ये सब बहुत गम्भीर सवाल हैं जो विचारणीय हैं। अपनी ओर से हम तो चाहते हैं कि ज्यादा से ज्यादा कॉमरेड नेतृत्व देने की अपनी योग्यता अर्जित करें। नेताओं और स्टाफ की कमी से नियमित पार्टी गतिविधियाँ ठीक ढंग से नहीं चल पा रही हैं, पार्टी कमेटियों का काम भी अधूरा पड़ा रह जाता है। पार्टी-मुखपत्र जिसकी इतनी मांग है, परन्तु उसका प्रकाशन भी हम नियमित रूप से नहीं कर पा रहे हैं। कुछ ही कॉमरेडों को हर तरह के कामों को सम्भालना पड़ता है यानी अलग-अलग तरह के काम करने के लिए पर्याप्त संख्या में योग्य कार्यकर्ताओं का अभाव आदि पार्टी के सामने वास्तविक संकट है। इसलिए हम तो यही चाहते हैं इस हॉल में बैठे हुए आप सभी लोग नेता बनें। परन्तु इसके लिए नेता बनने के तुल्य योग्यता आपको हासिल करनी होगी।

नेता कहने से हम क्या समझते हैं और वह क्या चीज है जो एक आदमी को नेता बनाती है? जो एक तरफ लोगों में नई चेतना-जोश पैदा कर सकता है, जो जनता में क्रान्तिकारी संगठन बना सकता है, साथ ही पार्टी की एकता और सेहत को जो बचा कर रख सकता है–उसे ही वस्तुत: नेता कहा जा सकता है। इन सब योग्यताओं के बिना कोई भी नेता नहीं बन सकता। ऐसे अनेक साथी हैं जो अच्छा भाषण दे सकते हैं, अच्छा लेख लिख सकते हैं, राजनीति की क्लास ले सकते हैं, परन्तु संगठन की पेचीदा समस्याओं को सुलझाने का तरीका बिल्कुल जानते ही नहीं हैं। संगठन की समस्या सुलझाने के लिए जो बात अत्यन्त जरूरी है वह यह है कि दूसरे को कुछ कहने से पहले उसकी बात को अच्छी तरह समझने की योग्यता उस नेता में होनी चाहिए। दूसरी बात यह है कि वही साथी संगठन की तरह-तरह की जटिल समस्याओं को सुलझा सकता है जो खुद उन सब समस्याओं से मुक्त हो। जो नेता अपनी समस्या से अपने आपको मुक्त करने की लड़ाई ही अगर नहीं चला सकता हो तो भला वह दूसरों को नेतृत्व कैसे दे सकेगा? ऐसे मामलों में नेतृत्व ऐसे कुछ अयोग्य लोगों के हाथों में जा पहुँचेगा जो सर्कुलर दे सकते हैं, क्लास ले सकते हैं, कॉमरेडों को फटकार सकते हैं, परन्तु सांगठनिक समस्याओं को कभी नहीं हल कर सकते हैं–अगर ऐसा हो तो पार्टी का काम नहीं चलेगा।

फिर ऐसे भी अनेक साथी हैं जो क्रान्ति के लिए बहुत कुछ छोड़ सकते हैं परन्तु जरूरी होने पर भी पारिवारिक जीवन को छोड़ कर नहीं आ सकते और न ही बिना-शर्त और खुशी-खुशी अपने आपको पार्टी के प्रति समर्पित कर सकते। तब ये नेता कैसे बन सकते हैं? सोचिए, हम लोगों ने किस तरह शुरू किया था? किस नेता ने उन दिनों हमें दो वक्त के खाने या सुरक्षित जीवन की गारण्टी दी थी जो हम किसी बात की परवाह किए बिना सब कुछ पीछे छोड़कर इस क्रान्तिकारी जीवन में कूद पड़े थे। उल्टे उन दिनों हमारे सामने यह बात स्पष्ट थी कि हम अपने दो वक्त के खाने का बन्दोबस्त कर भी पा सकते हैं और नहीं भी। ये वे शुरूआती इम्तहान थे जिनसे हमारा जीवन शुरू हुआ था और कोई किसी इम्तहान का सामना करने से पहले ही अपने-आप ही सोच रहा है कि वह नेता बनने के लायक है। खुद ऐसे इम्तहानों से गुजरे बिना इन्होंने कभी कोई योग्य, निष्ठावान या समर्पित क्रान्तिकारी तैयार भी नहीं किया।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष के 36वें स्मृति दिवस पर जगह-जगह सभाएं

कोलकाता (प.बं.) : प.ब. के मुख्यालय शहर का हृदयस्थल रानी रासमणि रोड 5 अगस्त हजारों लोगों से खचाखच भरा हुआ था। खराब मौसम की परवाह न करके वे राज्य के हर हिस्से से आए थे, अपना स्थान ग्रहण कर लिया था और सभा के मुख्य वक्ता पार्टी के प्रिय महासचिव कॉ. प्रभाष घोष को सुनने के लिए बेताबी से इंतजार कर रहे थे। इस अवसर को सम्मान पूर्वक मनाने की एक निशानी इसका विरला अनुशासन था। समय होते ही, सर्वहारा के महान नेता के प्रति केन्द्रीय व राज्य स्तरीय नेताओं और विभिन्न पार्टी इकाइयों, जन एवं वर्ग संगठनों की ओर से पुष्पांजलि अर्पित करने की कार्यवाई शुरू हुई। कॉमरेड शिवदास घोष पर रचित गान गाने के बाद, तरुण कम्युनिस्ट लीग कोमसोमोल द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया और केन्द्रीय कमेटी के सदस्य और पार्टी की पश्चिम बंगाल राज्य कमेटी के सचिव कॉ. सोमेन बोस द्वारा शुरूआत में दो शब्द कहने के बाद कॉ. प्रभाष घोष ने अपना भाषण रखा। अपने भाषण में कॉ. प्रभाष घोष ने पार्टी गठन में कॉमरेड शिवदास घोष के ऐतिहासिक संघर्ष और भारतीय क्रान्ति की रणनीति तय करने में मार्क्सवाद-लेनिनवाद का रचनात्मक प्रयोग करने के रास्ते इसे विकसित व समृद्ध करने और राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय दोनों क्षेत्रों में उभरने वाले विभिन्न सवालों व समस्याओं का जवाब देने में महान नेता के योगदानों को याद दिलाते हुए मुख्यत: दिखाया कि देश की दुखी विशाल जनता की मुक्ति गाँधीवादी लाइन या स्वामी विवेकानन्द व अन्य लोगों द्वारा उपदेशित अध्यात्मवाद पर चलकर क्यों नहीं हो सकती और क्यों मानव द्वारा मानव के शोषण का सदा-सदा के लिए खात्मा करने के लिए हर किसी को मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष चिन्तनधारा अपनाने की जरूरत है। सभी श्रोताओं ने उनका सुबोध और अन्तरभेदी भाषण ध्यान से सुना जो इस बात का परिचायक है कि कैसे कॉ. शिवदास घोष की चिन्तनधारा से मार्गदर्शित पार्टी का वैचारिक स्टैण्ड पाइण्ट जानने के लिए लोग उत्सुक हैं। सभा का समापन अन्तर्राष्ट्रीय गान के साथ हुआ।

कोल्लम, केरल : केरल में कॉमरेड शिवदास घोष स्मृति सभा 8 अगस्त को कोल्लम में आयोजित की गई। सभा टी.एम. वर्घीज हॉल में शाम को की गई जिसकी अध्यक्षता पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के सदस्य और केरल राज्य कमेटी के सचिव कॉमरेड सी.के. लुकोस ने की और पार्टी के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड माणिक मुखर्जी सभा के मुख्य वक्ता थे। अपने अध्यक्षीय भाषण में कॉ. लुकास ने कॉमरेड शिवदास घोष चिन्तनधारा के आधार पर मार्क्सवाद-लेनिनवाद के महान परचम को बुलन्द करते हुए राज्य में पार्टी द्वारा चलाए गए आन्दोलनों से सबको अवगत कराया और बताया कि कैसे पार्टी हर जिले में तेजी से बढ़ रही है और सीपीआई(एम), सीपीआई जैसी नकली मार्क्सवादी पार्टियों का लोगों के सामने तेजी से पर्दाफाश होता जा रहा है। कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं के विभिन्न पहलुओं पर रोशनी डालते हुए कॉमरेड माणिक मुखर्जी ने पूँजीवाद-विरोधी क्रान्ति की रफ्तार तेज करके कॉमरेड घोष के सपने को साकार करने के लिए पार्टी को मजबूत करने का सभी से आह्वान किया। (उनके भाषण का संक्षिप्त सार अलग से दिया जा रहा है)। कॉ. जी.एस. पदमकुमार ने कॉ. माणिक मुखर्जी के भाषण का अंग्रेजी से मलयायम में अनुवाद करके सुनाया। सभा की शुरूआत कॉमरेड शिवदास घोष पर रचित गान से हुई और अन्तर्राष्ट्रीय गीत के साथ समाप्त हुई। सभा से पहले सुसज्जित यादगार जुलूस भी निकाला गया।

कटक, ओडिशा : एसयूसीआई(सी) ओडिशा राज्य कमेटी ने कॉमरेड शिवदास घोष का 36वाँ स्मृति दिवस 5 अगस्त को शहीद भवन, कटक में मनाया। इस अवसर पर हुई सभा की अध्यक्षता पार्टी के ओडिशा राज्य सचिव कॉ. धुर्जटी दास ने की और पार्टी के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉ. असित भट्टाचार्य ने मुख्य वक्तव्य दिया। अपने लम्बे भाषण में कॉ. असित भट्आचार्य ने अन्य बातों के अलावा यह कहा कि सभी महापुरुष और चिन्तनकार महान ऐतिहासिक आन्दोलनों की उपज होते हैं। एक ऐतिहासिक जरूरत को पूरा करने के लिए ही कॉ. शिवदास घोष भी इस युग के महान मार्क्सवादी चिन्तनकार दार्शनिक और सर्वहारा के महान नेता के रूप में उभर कर आए हैं। वे भारतीय क्रान्ति के साथ एकात्म हो गए हैं। कॉमरेड शिवदास घोष और एसयूसीआई(सी) का नाम ही पूँजीवाद-विरोधी क्रान्ति की भयग्रन्थी से ग्रस्त दमनकारी पूँजीपति वर्ग और उसके ताबेदारों की हड्डियों में सिहरन पैदा कर देता है।

कॉ. शिवदास घोष के चिन्तन को सही-सही जानने-समझने और प्रयोग करने तथा वैचारिक व सांगठनिक दोनों तरह से एसयूसीआई(सी) की तजी से बढ़ोतरी में ही मुक्ति निहित है। कॉ. धुर्जटी दास ने अपने संक्षिप्त भाषण में सभी से राज्य में जोरदार जनवादी आन्दोलन खड़ा करने का आह्वान किया। ओडिशा राज्य कमेटी के सदस्य कॉ. शंकर दासगुप्ता ने कॉ. भट्टाचार्य के द्वारा अंग्रेजी में दिए भाषण का उड़िया में अनुवाद किया। सभा की शुरूआत से पहले कोमसोमोल ने शानदार गॉर्ड ऑफ ऑनर दिया।

बैंगलोर (कर्नाटक): 11 अगस्त को बैंगलोर शहर के टाउनहॉल में स्मृति दिवस पर सभा की गई। यहाँ भी सभा के मुख्य वक्ता कॉ. प्रभाष घोष थे। पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के सदस्य और राज्य कमेटी के सचिव कॉ. के. राधाकृष्ण ने अपने संक्षिप्त अध्यक्षीय भाषण में कहा कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद को विकसित करते हुए और इस प्रकार दुनिया भर में जिन सवालों से कम्युनिस्ट रूबरू थे उनका जवाब देते हुए मार्क्सवाद में कॉ. शिवदास घोष द्वारा दिए गए योगदानों को मद्देनज़र रखें तो 53 साल की बनिस्बत कम उम्र में ही हो गई उनकी मौत भारतीय व अन्तर्राष्ट्रीय आन्दोलन के लिए अपार क्षति थी। उनका सबसे बड़ा योगदान यह है कि सीपीआई के मौजूद रहते हुए भी चूंकि भारत में कोई सही कम्युनिस्ट पार्टी नहीं थी, अत: उन्होंने अप्रैल 1948 में एसयूसीआई की स्थापना की और सभी कष्टसाध्य संघर्ष करते हुए इसे इतना पृष्टपोषित व मार्गदर्शित किया कि यह आज देश के लगभग सभी राज्यों के लोगों में गहरी जड़ें जमा चुकी है। उन्होंने आने वाले समय में पार्टी को मजबूत करने और जनवादी आन्दोलन गठित करने की सभी से अपील की। इसके बाद कॉ. प्रभाष घोष ने सभा को सम्बोधित किया और दिखाया कि कैसे मार्क्सवाद-लेनिनवाद-कॉमरेड शिवदास घोष चिन्तनधारा न केवल भारतीय बल्कि विश्व क्रान्ति की राह रोशन कर सकती है। साथ ही इस तरह से शोषण के जुए तले दबी जनता को मुंक्ति दिला सकती है। उनके भाषण का संक्षिप्त सार बाद में प्रकाशित किया जाएगा।

चेन्नई, तमिलनाडू: कॉमरेड शिवदास घोष का 36वाँ स्मृति दिवस मनाने की कड़ी में चेन्नई में पुरुषाइवाक्कम में टाना स्ट्रीट पर एक राज्य स्तरीय जनसभा हुई। इसमें सभी जिलों से पार्टी कॉमरेडों, चेन्नेई के समर्थकों, हमदर्दों ने भाग लिया। कॉ. शिवदास के उद्धरणों एवं 14 मार्च की दिल्ली रैली की फोटोज की प्रदर्शनी भी सभा स्थल पर लगाई गई। सभा में भारी संख्या में लोगों ने शिरकत की। सभा की अध्यक्षता एसयूसीआई(सी) की तमिलनाडू राज्य सांगठनिक कमेटी के सचिव कॉ. ए. रंगास्वामी ने की। सभा के मुख्य वक्ता पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के सदस्य और कर्नाटक राज्य सचिव कॉ. के राधाकृष्ण थे।

अपने सम्बोधन में कॉ. रंगास्वामी ने मुख्यत: जब से एआईएडीएमके सरकारी सत्ता में आई है लोगों पर किए विभिन्न हमलों का जिक्र किया। नकली मार्क्सवादी पार्टियों सहित सभी विपक्षी पार्टियाँ पूँजीपति वर्ग के स्वार्थ की पूर्ति कर रहीं हैं और इसलिए लोगों को उनसे उम्मीद करने को कुछ नहीं है। लोगों को अपनी रहनुमाई करने के लिए सही पार्टी को पहचानना होगा, सही नेतृत्व के पीछे लामबन्द होना होगा, जनकमेटियों का गठन करना होगा और राज्य व केन्द्र सरकार द्वारा उठाए जा रहे जनविरोधी पूँजीपतिपरस्त कदमों के खिलाफ लम्बे संघर्ष के लिए तैयार होना होगा।

कॉ. राधाकृष्ण ने मार्क्सवाद-लेनिनवाद की सही समझदारी के आधार पर राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति का सही-सही विश्लेषण करने में कॉमरेड शिवदास घोष के अमूल्य योगदानों को याद दिलाते हुए दिखाया कि कैसे इस दिन 1976 में कॉ. शिवदास घोष की मृत्यु के बाद भी, उनके सहयोद्धा दिवंगत कॉ. नीहार मुखर्जी के योग्य नेतृत्व में उनकी शिक्षाएँ केवल देश में ही नहीं बल्कि विदेश में भी फैल गई हैं। समाजवादी खेमा ढह जाने के बाद से विश्व साम्राज्यवाद-विरोधी आन्दोलन खड़ा करने की भरसक कोशिश कर रही है। इसी प्रक्रिया में विभिन्न देशों की कम्युनिस्ट ताकतों को सुदृढ़ करने और उन्हें कॉ. शिवदास घोष के चिन्तन से लैस करने का बीड़ा उठाया है। उन्होंने कहा कि भारत के मेहतनकश लोगों के पास पूँजीवाद के खिलाफ अपने संघर्ष में उनका नेतृत्व करने के लिए सही पार्टी है एसयूसीआई(सी)। पूँजीवाद को उखाड़ फेंकने से ही उनके जीवन की सभी समस्याओं का समाधान हो सकता है। उन्होंने एसयूसीआई(सी) को मजबूत करने का सभी से आह्वान किया। संघर्ष के अपने खुद के औजार जनकमेटियों का हर स्तर पर निर्माण करने का भी आह्वान किया।

अगरतला, त्रिपुरा: अगरतला में 8 अगस्त को मातंगिनी प्रीतिलता हाल में स्मृति सभा की गई। कोमसोमोल द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया और सभाध्यक्ष पार्टी की त्रिपुरा राज्य सांगठनिक कमेटी के सचिव कॉ. अरुण भौमिक के संक्षिप्त भाषण के बाद पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के सदस्य और पश्चिम बंगाल राज्य कमेटी के सचिव कॉ. सौमेन बोस ने मुख्य वक्ता के रूप में सभा को सम्बोधित किया। अपने लम्बे भाषण में कॉ. बोस ने बताया कि कैसे एक ऐतिहासिक कठोर संघर्ष चलाकर कॉमरेड शिवदास घोष, एक समय जिनका न कोई नाम था, न पहचान, इस युग के एक अग्रणी मार्क्सवादी चिन्तनकार के रूप में उभर कर आए थे। कॉ. शिवदास घोष की शिक्षाओं को याद दिलाते हुए उन्होंने अतीत के सभी महापुरुषों जैसे विद्यासागर, नेताजी सुभाष, भगतसिंह, शरतचन्द्र, रवीन्द्रनाथ, नजरूल आदि के जीवन-संघर्ष से सीख लेते हुए उन्हें आत्मसात और नि:शेषित करते हुए अच्छे कम्युनिस्ट बनने का सभी से आह्वान किया। पश्चिम बंगाल में मौजूदा सियासी हालात कॉ. जिक्र करते हुए कॉ. सौमेन बोस ने बताया कि सिंगुर-नन्दीग्राम आन्दोलन और तत्कालिक सीपीआई(एम) सरकार द्वारा जनआन्दोलन पर किए गए फासीवादी हमलों के सन्दर्भ में हमें तृणमूल कांग्रेस के साथ एकता कायम करनी पड़ी तब भी इसके बारे में कोई भ्रम नहीं था और अच्छी तरह से जानते थे कि सत्ता में आते ही यह भी दूसरी किसी बुर्जुआ, पैटी बुर्जुआ पार्टी की तरह जनविरोधी नीतियों को अपनायेगी। अब हम कांग्रेस-नीत केन्द्र सरकार और तृणमूल कांग्रेस-नीत राज्य सरकार दोनों की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ जोरदार जनवादी आन्दोलन गठित करने को तैयार हैं।

हैदराबाद, आंध्र प्रदेश : 8 अगस्त को प्रैस क्लब, हैदराबाद में स्मृति सभा की गई। सभा की अध्यक्षता पार्टी की आन्ध्र प्रदेश राज्य सांगठनिक कमेटी के सदस्य कॉ. बी.एस. अमरनाथ ने की। सभा के मुख्य वक्ता पार्टी के पोलिट ब्यूरा सदस्य कॉ. कृष्ण चक्रवर्ती थे। पार्टी के आंध्र प्रदेश राज्य सचिव कॉ. श्रीधर ने अन्य बातों के अलावा कहा कि पार्टी की पहलकदमी पर ही 1993 में राज्य में संयुक्त वाम-जनवादी आन्दोलन उभरा था। लेकिन बाद में सीपीआई(एम) और सीपीआई ने किसी भी वोट बटोरू पार्टी की तरह चुनावों में फायदा उठाने के लिए इस वामपंथी गठबंधन को छोड़ दिया था और या तो अलगाववादी टीआरएस या कांग्रेस या क्षेत्रीय पार्टी टीडीपी के साथ हो गई। उन्होंने सरकार की जनविरोधी नीतियों से रूबरू आम आदमी की दयनीय स्थिति को भी बयां किया और सभी से आन्दोलन की एकमात्र शक्ति एसयूसीआई(सी) को मजबूत करने का आह्वान किया। कॉ. चक्रवर्ती ने अपने भाषण में कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं पर विस्तार से चर्चा की और चौतरफा सांस्कृतिक पतन, भ्रष्टाचार की आई बाढ़, महिलाओं पर बढ़ते हमलों, अलगाववादी झगड़ों और बुर्जुआ व्यक्तिवाद के खतरे के पहलुओं पर कई महत्वपूर्ण बातें कही जो बुराइयाँ इस मरणासन्न पूँजीवादी व्यवस्था से उत्पन्न होती हैं और हमारे जीवन के मर्मस्थान को ही जो चट करती जा रही हैं। सर्वहारा संस्कृति अर्थात् सामूहिकतावाद और मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष चिन्तनधारा पर आधारित सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद ही

(शेष पृष्ठ 5 पर)

पूँजीवाद पूरे समाज को अनैतिकता की दलदल में धकेल रहा है

आसाम की स्मृति सभा में कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती का भाषण

5 अगस्त कॉमरेड शिवदास घोष स्मृति दिवस पर पार्टी की राज्य कमेटी के आह्वान पर गुवाहाटी के भास्कर नाट्यमन्दिर में आयोजित सभा की अध्यक्षता वरिष्ठ कॉमरेड भूपेन्द्रनाथ ककाती ने की। मुख्य वक्ता पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती ने अपने भाषण के दौरान कहा कि हम जब 5 अगस्त मनाते हैं तब यह हमारे लिए महज कोई औपचारिकता की बात नहीं होती है। क्रान्तिकारियों के लिए औपचारिकता कतई वांछित नहीं है। कॉ. शिवदास घोष की शिक्षा से, चिन्तन से जीवन का जो सही तात्पर्य हम समझ सके हैं, उसी को हथियार बना कर क्रान्तिकारी जीवन के क्रियाकलाप निरन्तर बढ़ाते जाने की शपथ इस दिन हम लेते हैं

आज देश में, विशेषकर आसाम में भयंकर परिस्थिति पैदा हुई है। कुछ दिन पहले इसी गुवाहाटी में एक महिला पर हमला हुआ। यह सिर्फ एक युवती पर हमला नहीं बल्कि पूरी नारी जाति की इज्जत पर तथा इन्सानियत पर हमला है। इस प्रकार की घटना सिर्फ आसाम में ही नहीं घटी, बल्कि कुछ दिन पहले कर्नाटक के मैंगलोर में भी इसी प्रकार के हमले की घटना घटी थी। भारत के लगभग सभी राज्यों में महिलाओं पर हमले हो रहे हैं। 5 साल की बच्ची से लेकर 65-70 साल की महिलाओं तक सभी उम्र की महिलाओं पर होने वाले इस प्रकार के अपराधों का रिकार्ड यदि आप देखेंगे तो हैरान रह जाएंगे। देश में विशेषकर राजधानी दिल्ली में स्कूल-कॉलेजों में, सड़कों पर, यहाँ तक कि हस्पतालों में भी महिलाएं सुरक्षित नहीं हैं। देश के अन्दर कहीं भी महिलाओं के लिए सुरक्षा नहीं है। ये घटनाएं घट रही हैं इसका कारण यह है कि हमारे पूरे समाज को अनैतिकता की दलदल की तरफ धकेला जा रहा है।

उन्होंने कहा कि इसी समय आसाम के बीटीएडी के अन्तर्गत कोकराझार, चिरांग जिले के विभिन्न क्षेत्रों में शिशु हत्याएं हो रही हैं, नारी हत्याएं, वृद्ध हत्याएं जारी हैं। जिसे 'दंगा' कहा जाता है वही चल रहा है। इस तरह की घटनाएं क्यों घट रही हैं इसका कारण जाने बिना समाधान का रास्ता खोजा नहीं जा सकेगा। सन 1964 में देश के लगभग सभी राज्यों में ही हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिक दंगा हुआ था। इसी समय साम्प्रदायिक समस्या का समाधान सूत्र खोजने के लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरूजी के निर्देश पर दिल्ली में एक जनतांत्रिक कन्वेंशन का आयोजन किया गया था। उस सभा में हमारी पार्टी के तत्कालीन पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड प्रीतीश चन्दा ने हमारी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की तरफ से भेजे गए एक पत्र को पढ़ कर सुनाया। इस पत्र में कॉमरेड शिवदास घोष के विश्लेषण के आधार पर कहा गया था कि भारत के स्वाधीनता आन्दोलन के अन्दर ही इस साम्प्रदायिकता का बीज निहित था। कॉमरेड शिवदास घोष ने व्याख्या करके दिखाया था कि भारत में जिस समय आजादी आई उस समय ऐतिहासिक रूप से बुर्जुआ जनतांत्रिक क्रान्ति का स्तर था। यूरोप में जब सामंती व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष हुआ था, उस समय साम्राज्यवाद नहीं था। पूँजीवाद तब आ ही रहा था। उस समय राजतन्त्र था। अर्थात सामन्तवाद और निरंकुश शासन था। उसके खिलाफ आनी शुरू हुई थी जनतांत्रिक अधिकार की ध्यान-धारणा, जनतांत्रिक ध्यान-धारणा, धर्मनिरपेक्षता की धारणा। उससे पहले धर्मनिरपेक्षता की धारणा, बुर्जुआ मानवतावाद की धारणा, स्वाधीनता की धारणा नहीं थी। बुर्जुआ जनतांत्रिक क्रान्ति के बाद ही धर्म को व्यक्तिगत विश्वास तक सीमित रखते हुए सामाजिक कार्य-कलाप से उसको वर्जित किया गया था। 1902-03–इसी समय लेनिन ने दिखाया था कि पूँजीवाद का विकास अपने चरम पर पहुँच गया था अब यह एक इंच भी अग्रसर नहीं हो सकता है और पूँजीवाद का अधोपतन शुरू हो गया है। भारत के स्वाधीनता आन्दोलन की समाप्ति 1947 में हुई। उस समय अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में पूँजीवाद प्रतिक्रियाशील हो गया था। 1917 में सोवियत में पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति सफल हुई थी और इस क्रान्ति की लहरें पूरी दुनिया में फैल गई थी। पूरी दुनिया में मजदूर आन्दोलन ने शक्तिशाली रूप अख्तियार कर लिया था। एशिया, अफ्रीका जिन सब देशों में कम्युनिस्ट संगठन थे, उन सब देशों में जनतांत्रिक आन्दोलन शक्तिशाली हो गए थे। क्योंकि बुर्जुआ वर्ग जनता के किसी भी स्वप्न को पूरा नहीं कर सकता था। परिणामतः वर्गगत रूप से ही देश-देश में बुर्जुआ वर्ग उस समय मजदूर क्रान्ति के भय से आक्रांत

गुवाहाटी में स्मृति सभा को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती

था। अतः यूरोप की तरह सर्वात्मक क्रान्तिकारी चरित्र और कार्यक्रम उस समय और किसी भी देश में बुर्जुआ वर्ग के नेतृत्व में संचालित आन्दोलन में नही था। अतः हमारे देश में स्वाधीनता आन्दोलन में बुर्जुआ नेतृत्व धार्मिक कुसंस्कारों इत्यादि सामंती चिन्तनधारा के खिलाफ सांस्कृतिक क्रान्ति करने के लिए आग्रही नहीं था। हमारे देश में स्वाधीनता आन्दोलन के बुर्जुआ नेतृत्व ने साम्प्रदायिकता की समस्या को सुलझाने के लिए सही दृष्टिकोण नहीं अपनाया था। धर्मनिरपेक्ष जनतांत्रिक धारणा स्वाधीनता आन्दोलन में गृहीत नहीं हुई। बल्कि धर्म के आधार पर बुर्जुआ मानवतावाद की स्थापना होती हमें देखने को मिलती है। 'ईश्वर अल्लाह तेरो नाम, सबको सन्मति दे भगवान', 'हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई'–इन सब गीतों और बातों में धर्मनिरपेक्षता कहाँ है? धार्मिक प्रभाव से मुक्त मानवीय मूल्यबोध के आधार पर यदि सांस्कृतिक आन्दोलन निर्मित करने का प्रयास होता तो देश में आज ऐसे भयंकर हालात पैदा नहीं होते। इसीलिए कॉमरेड शिवदास घोष ने कहा था कि राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन के माध्यम से भारत राजनैतिक तौर पर एक राष्ट्र के रूप में उभरने के बावजूद, जात-पात, धर्म, भाषा, क्षेत्रीयतावाद, प्रादेशिकतावाद–इन सब सामंती सोच विचार को केन्द्र करके सामाजिक-सांस्कृतिक रूप से बँटा हुआ ही रह गया है। येन केन प्रकारेण आजादी हासिल करने की चाहत में गांधीजी के नेतृत्व में ब्रिटिश साम्राज्यवादियों व सामंतवाद के साथ समझौता किया गया। सामाजिक-सांस्कृतिक क्रान्ति के कार्यक्रम की अवहेलना की गई। परिणामतः धार्मिक भावना-धारणा का खात्मा नहीं हुआ। खुदीराम, बाघाजतीन, मास्टर दा और सर्वोपरि नेताजी जैसे समझौताहीन धारा के नेतृत्व के उस समय उपस्थित रहने के बावजूद उस मानसिकता को प्रधानता नहीं मिली। अतः समझौतावादी मानसिकता की प्रधानता बनी रही। 1942 में जब नेताजी देश छोड़कर चले गए, देश का स्वाधीनता आन्दोलन गांधीजी पर पूरी तरह निर्भरशील हो गया। परिणाम के रूप में हम देशवासी सिर्फ हिन्दू-मुसलमान ही नहीं, बल्कि बंगाली, असमिया, बिहारी, पंजाबी, तमिल, तेलगू, कन्नड़, मराठी, गुजराती इत्यादि अनेकता लिए रह गए, एकताबद्ध एक भारतीय राष्ट्र के रूप में उभर कर नहीं आ सके। हम कहते हैं कि हम भारतीय हैं लेकिन असल में या तो असमिया, नहीं तो बंगाली, या बिहारी, या पंजाबी हैं, नहीं तो हम बोडो हैं या फिर हम ब्रह्मण या शूद्र हैं। इसी प्रकार ही हम सोचते हैं। सिर्फ इतना ही नहीं कि विभेदकारी मानसिकता रह गई बल्कि बढ़ती जा रही है। इसकी वजह कांग्रेस बीजेपी पार्टी तो हैं ही, यहाँ तक कि वामपंथी के रूप में परिचित सीपीआई, सीपीआई(एम), सीपीआई(एमएल) जैसी पार्टियाँ भी धर्म और जात-पात के नाम पर राजनीति करते हुए वोट बटोरू पार्टियों में परिणत हो गई हैं। फलस्वरूप भारत में आज भी साम्प्रदायिकता का खात्मा नहीं हुआ है। कॉमरेड शिवदास घोष ने जोर देकर कहा था कि एक नई सभ्यता तभी निर्मित हो सकती है जब एक नई संस्कृति के आधार पर वह निर्मित हो। पुरानी संस्कृति को लेकर यह कभी भी संभव नहीं है। देश में हिन्दू-मुस्लिम समस्या तो थी ही, लेकिन 1984 में हमने दिल्ली में हिन्दू-सिख दंगा होते देखा। उग्र हिन्दुत्ववादियों के हाथों कई हजार सिखों की हत्याएं की गई। देश को 'हिन्दू राज' बनाने का प्रयास हो रहा है। फिर देखिए हिन्दुओं के बीच में ही भेदभाव है। उच्च वर्ण हिन्दू, निम्नवर्ण हिन्दू, पिछड़े हुए हिन्दू हैं। हिन्दू समाज के अन्दर वर्णवाद सक्रिय रूप से मौजूद है।

उन्होंने कहा कि आसाम के हालात चिन्ताजनक हैं। एक विशाल राज्य को खण्ड-विखण्ड करके छोटे-छोटे राज्यों में परिणत कर दिया गया। यहाँ पर अन्त नहीं। इस राज्य को और भी खण्डित होने का सामना करना पड़ रहा है। आदमी आदमी में झगड़ा, हिन्दू-मुसलमान के बीच झगड़ा, असमिया-गैरअसमिया का झगड़ा निरन्तर जारी है। समाज में विभाजनकारी सोच बढ़ती ही जा रही है। देश टुकड़े-टुकड़े होकर विभिन्न भागों में बँटता जा रहा है। उत्तर-प्रदेश एक विशाल राज्य था। एक भाषा-भाषी लोग वहां रहते हैं। आसाम की तरह बहु भाषा-भाषी राज्य वह नहीं है। उस राज्य को भी दो टुकड़ों में बांट दिया गया। पूर्व मुख्यमंत्री ने उस राज्य को चार भागों में बांटने का षड्यन्त्र किया था। देश को खण्ड-विखण्ड किसलिए, किसके स्वार्थ में किया जा रहा है? इसके चलते किसका फायदा होगा? फायदा होगा पूँजीपति वर्ग का, उनके ही स्वार्थ की पूर्ति होगी। विश्व हिन्दू परिषद, बीजेपी हिन्दू-मुसलमान के नाम पर विभेद पैदा करके भारतवासियों में फूट डाल रही हैं। किसके फायदे के लिए? वे इससे पूँजीपतियों की सेवा करती हैं। यह बात आपको समझनी होगी। जो ताकतें मनुष्य-मनुष्य में विभेद पैदा करती हैं–वे किसके फायदे के लिए ऐसा कर रही हैं इस मामले को समझना होगा। जो जनता में फूट डालना चाहते हैं वे जनता के शत्रु हैं। कॉमरेड शिवदास घोष के चिन्तन की रोशनी में यह बात लोगों को समझानी होगी। आजादी आन्दोलन में हजारों-हजार लोग एकजुट होकर कूद पड़े थे–हजारों-हजार छात्र-युवक प्राण न्योछावर करने के लिए मैदान में आ गए थे–खुदीराम से लेकर भगतसिंह तक। 'इंकलाब' के नारे से उस समय आकाश-पाताल गूँज उठा था। एक नई संस्कृति, राष्ट्रीयतावादी संस्कृति का जन्म हुआ था। लेकिन आज इससे काम चलेगा नहीं। 'वन्देमातरम्' कहने से अब काम नहीं चलेगा, बल्कि आन्दोलन की नई धारा में, शोषित लोगों की एकता के नए नारे को जन्म देना होगा। सम्पत्ति पर सामाजिक या सामूहिक मालिकाना कायम करने की दिशा में जाना होगा। यही है पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति की परिभाषा। यदि पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति की बात कहें तो व्यक्ति-स्वार्थबोध को, व्यक्ति-सम्पत्तिजनित मन-मानसिकता को त्याग कर सामाजिक स्वार्थ को ही खुद का स्वार्थ मानना होगा। मार्क्स ने कहा था जो मजदूर दुनिया को बदलेंगे उन्हें पहले खुद को बदलना होगा। यह परिवर्तन है कम्युनिस्ट संस्कृति हासिल करना। कॉमरेड शिवदास घोष ने अपने जीवन में और पार्टी के अन्दर इस संस्कृति पर अमल किया था। कॉमरेड शिवदास घोष का सबसे बड़ा योगदान है, भारत की ठोस परिस्थिति में कम्युनिस्ट संस्कृति को रूप देना और उसको पार्टी के नेताओं से लेकर कार्यकर्ताओं में प्रयोग करना। इसी संस्कृति को अमल में लाते हुए वे खुद को कम्युनिस्ट बना सके थे और भारत में एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के नाम से एक सही कम्युनिस्ट पार्टी निर्मित कर सके थे।

कम्युनिस्ट संस्कृति हासिल करके सारे देश में इस उन्नत संस्कृति का प्रसार करना होगा। यदि यह काम हम कर सकें तो धर्म को लेकर विवाद, जात-पात के झगड़े, साम्प्रदायिक दंगे-फसाद, अंधराष्ट्रवाद, उग्र प्रादेशिकतावाद को समाज से मिटा देना संभव होगा। क्रान्ति तभी संभव है जब पूरे देश के लोग सही कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व

(शेष पृष्ठ 7 पर)

कॉ. घोष स्मृति सभाएं...

(पृष्ठ 3 का शेष)

एकमात्र रास्ता है जिससे इन सब संकीर्ण, तबकाती, फूटपरस्त रुझानों को लोगों में से दूर किया जा सकता है और पूँजीवाद-विरोधी क्रान्ति का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता हैं।

गुवाहाटी, असम : राज्य स्तरीय स्मृति सभा 5 अगस्त को कुमार भास्कर नाट्य मन्दिर, गुवाहाटी में हुई। सभा की अध्यक्षता पार्टी की असम राज्य कमेटी के सदस्य कॉ. भूपेन्द्रनाथ ककाति ने की। जबकि पार्टी के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती मुख्य वक्ता के रूप में मौजूद थे। पार्टी की असम राज्य कमेटी की सचिव कॉ. चन्द्रलेखा दास ने स्मृति सभा में बोलते हुए सभी तबके के लोगों को साम्प्रदायिक, संकीर्ण क्षेत्रीयतावादी ताकतों को अलग-थलग करने और पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति के परिपूरक संयुक्त जनवादी जनआन्दोलन गठित करने का आग्रह किया। कॉ. भूपेन्द्रनाथ ककाति ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सभी लोगों से अपील की कि कॉमरेड शिवदास घोष के चिन्तन को अपनाएं और एसयूसीआई(सी) को मजबूत करें। दो प्रस्ताव भी सर्वसम्मति से पारित किए गए। एक वर्तमान नस्लीय-साम्प्रदायिक हत्याकाण्ड के चले दौर के खिलाफ और दूसरा ब्रह्मपुत्र नदी से आई विनाशकारी बाढ़ और भूमि कटाव के बारे में। असम में हुए दंगे-फसाद और खून-खराबे में मारे गए लोगों की याद में सभा में एक मिनट का मौन धारण किया गया।

दुर्ग, छ.ग. : सर्वहारा के महान नेता कॉ. शिवदास घोष का स्मरण दिवस पूरे सम्मान से मनाया गया । सर्वप्रथम हमारे प्रियतम नेता, हमारे शिक्षक, पथप्रदर्शक व इस युग के अन्यतम मार्क्सवादी दार्शनिक व चिन्तक तथा सर्वहारा के महान नेता कॉ. शिवदास घोष के चित्र पर माल्यार्पण किया गया। सभा में सबसे पहले मुख्य वक्ता केन्द्रीय कमेटी सदस्य कॉ गोपाल कुण्डु ने अपना वक्तव्य रखा और कहा कि आप सभी जानते हैं कि आज का दिन हमारे जीवन का सबसे दुखदायी दिन है क्योंकि आज ही के दिन 1976 मे इस युग के महान मार्क्सवादी दार्शनिक व चिंतक, हमारे शिक्षक, पथप्रदर्शक एवं एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के संस्थापक महासचिव कॉ. शिवदास ने अंतिम सांस ली थी। वे केवल 53 वर्ष तक जीवित रहे और इतने कम समय में बहुत बड़ा काम कर दिया और वह काम था एक सही मार्क्सवादी क्रांतिकारी पार्टी एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) का निर्माण। उन दिनों स्टॉलिन व माओत्सेतुंग द्वारा मान्यता प्राप्त पार्टी थी सीपीआई। देश में अन्य वामपंथी पार्टियाँ भी थी जिनका जनता पर अच्छा खासा प्रभाव था। इन सभी वामपंथी पार्टियों के रहते एक नई कम्युनिस्ट पार्टी बनाना बड़ा ही कठिन कार्य था। उन्होंने देखा कि सी पी आई ने आँख बंद करके अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट लाइन का अनुसरण किया एवं भारत की वास्तविक स्थिति के आधार पर एक सही कम्युनिस्ट पार्टी बनाने मे असफल रहे। उन्होंने 1939 मे नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की कोई सहायता नहीं की और नेताजी ने जब एक वाम फ्रंट बनाने का आह्वान किया तब भी उन्होंने इन्कार कर दिया और इस तरह उन्होंने दक्षिणपंथियों को सहायता पहुँचाई। कॉ. शिवदास घोष ने 6 कॉमरेडों के साथ पार्टी शुरू की तब उनके पास रहने का कोई ठिकाना नहीं था कई दिनों तक भूखा रहना पड़ता था, रुपये पैसे भी नहीं थे और न ही आजादी आंदोलन के क्रांतिकारी के हिसाब से उनकी कोई ख्याति थी। धीरे-धीरे पार्टी क्लास करते हुये आम जनता की समस्याओं के लिए लड़ते हुए पश्चिम बंगाल से शुरू करके देश के अधिकतर राज्यों में हमारी पार्टी फैल गयी है। जहाँ सभी वामपंथी पार्टियाँ जनआंदोलन करना भूल गयी हैं, जनता की सही मांगों को लेकर लड़ना भूल गयी हैं और पूँजीपतियों की सेवा करने वाली पार्टियाँ बन गयी हैं, वहीं एकमात्र हमारी एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) पार्टी ही आम जनता की समस्याओं के खिलाफ लड़ रही है। विगत 14 मार्च को लाख से अधिक लोगों के साथ दिल्ली में रैली की गई जिसको मीडिया द्वारा पूरी तरह छुपा दिया गया। कॉ. गोपाल कुण्डु ने अन्ना हजारे के आंदोलन की व्याख्या करते हुए कहा कि इस आंदोलन की कई सीमाएं हैं परन्तु यह एक जनआंदोलन है जिसमें हम सभी को भाग लेना चाहिए। इस जनआंदोलन में जनता में चेतना आयी है और वे सचेत हुए हैं किन्तु इस आंदोलन का फल तभी प्राप्त होगा जब इसे पूँजीवाद-विरोधी क्रांतिकारी लाइन पर चलाया जाये। उन्होंने कहा कि पूरे विश्व में पूँजीवादी आर्थिक संकट छाया हुआ है इसके साथ साथ भारतीय पूँजीवादी व्यवस्था भी आर्थिक संकट में है और इस संकट के कारण आम जनजीवन की समस्याएं, गरीबी, बेरोजगारी, आसमान छूती महंगाई, शिक्षा-स्वास्थ्य की समस्या एवं नैतिक पतन आदि बढ़ रहा है। इसलिए इस पूँजीवादी व्यवस्था को उखाड़ फेंकना होगा। इसके अलावा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर साम्राज्यवादी शोषण के खिलाफ, अन्तर्राष्ट्रीय साम्राज्यवाद-विरोधी आंदोलन भी तैयार करना होगा। कॉ. शिवदास घोष ने देश की ठोस अवस्था के आधार पर मार्क्सवाद-लेनिनवाद सिद्धांत के आधार पर एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) एक सही कम्युनिस्ट पार्टी गठित की। उन्होंने कहा कि आज के इस अधोपतित व्यक्तिवादी विचारों के खिलाफ लड़ कर अपने आप को एक सही कम्युनिस्ट बनाना होगा इसके लिए उच्च व उन्नत कम्युनिस्ट चरित्र हासिल करना होगा।

इस सभा में कॉ. विश्वजीत हारोडे ने भी अपना वक्तव्य रखा। यह सभा कॉ. घोष पर रचित गीत एवं क्रांतिकारी नारों के साथ समाप्त हुई। सभा की अध्यक्षता कॉ. आत्माराम साहू ने की।

नागपुर : एस.यू.सी.आई (कम्युनिस्ट) के संस्थापक महासचिव, दिवंगत महान क्रांन्तिकारी नेता एवं अग्रणी मार्क्सवादी दार्शनिक कामरेड शिवदास घोष के 36वें स्मरण दिवस पर नागपुर के राष्ट्रभाषा भवन में 12 अगस्त को स्मृति सभा सम्पन्न हुई। इसकी अध्यक्षता पार्टी के क्षेत्रीय संगठक कामरेड प्रमोद काम्बले ने की। मुख्य वक्ता रहे एस.यू.सी.आई (कम्युनिस्ट) के स्टाफ सदस्य एवं उड़ीसा राज्य कमेटी के सचिव मण्डल के सदस्य का. शंकर दासगुप्ता ने व्यक्तिवाद से निरन्तर संघर्ष करने और समाज में मौजूद सभी समस्याओं की मूल जड़ पूंजीवादी व्यवस्था को उखाड़ फेंकने व समाजवाद स्थापित करने की दिशा में दायित्व निभाने की अपील की। निरन्तर वर्षा के बावजूद सभा में नागपुर, यवतमाल, वर्धा व वाशिम जिलों से आये कार्यकर्ताओं ने दिवंगत प्रिय नेता को श्रद्धांजलि अर्पित की और अपने जीवन में क्रान्तिकारी बदलाव लाने व जनआन्दोलनों को तगड़ा बनाने का संकल्प लिया।

भोपाल, मध्यप्रदेश : इस युग के विशिष्ट मार्क्सवादी चिंतनकार, सर्वहारा के महान नेता का. शिवदास घोष के 36वें स्मरण दिवस के अवसर पर 5 अगस्त को एक राज्यस्तरीय स्मरण सभा एस.यू.सी.आई. (सी) की मध्यप्रदेश राज्य सांगठनिक समिति के तत्वावधान में स्थानीय राजधानी शादी हाल, बोगदा पुल में आयोजित हुई। सभा के मुख्य वक्ता पार्टी के केन्द्रीय समिति सदस्य, का. सत्यवान ने अन्य बातों के साथ कहा कि 5 अगस्त की यह स्मरण सभा हमारे लिए औपचारिकता नहीं है बल्कि इससे हमारे समक्ष एक बड़ा मकसद है। कॉ. शिवदास घोष आज हमारे बीच शारीरिक रूप से उपस्थित नहीं है, न ही का. निहार मुखर्जी, जिन्होंने उनके देहांत के बाद पार्टी की बागडोर संभाली थी। उनके छह सात शुरूआती सहयोद्धा भी नहीं रहे। परन्तु का. शिवदास घोष के क्रान्तिकारी विचारों का खजाना हमारे पास है जो वे हमारे लिए छोड़कर गये हैं और हमारे पास है एस.यू.सी.आई. (कम्युनिस्ट) पार्टी जो का. शिवदास घोष की महानतम रचना है जिसकी अगुवाई कर रहे हैं उन्हीं के द्वारा शिक्षित-दीक्षित नये महासचिव कामरेड प्रभास घोष। मौजूदा कठिन स्थिति में शोषित-पीड़ित जनता पर पूंजीपति वर्ग के आक्रमण - अत्याचार से उनकी रक्षा करना - उनके क्रांतिकारी आंदोलनों को खड़े करना हमारी जिम्मेदारी है। 5 अगस्त हमें इस जिम्मेदारी की याद दिलाता है।

सभा में राज्य सचिव का. उमाप्रसाद ने भी वक्तव्य रखा। अध्यक्षता राज्य सांगठिक समिति के सदस्य का. रामावतार शर्मा ने की। संचालन राज्य सांगठनिक समिति के सदस्य का जे.सी.बरई ने किया।

मारुति मानेसर प्लांट में श्रमिकों के निष्कासन रद्द करो

ए.आई.यू.टी.यू.सी. का बयान

मारुति सुजुकी इण्डिया लिमिटेड द्वारा इसके मानेसर प्लांट से 500 स्थायी श्रमिक-कर्मचारियों को कम्पनी से निकालने का केन्द्रीय श्रम संगठन-ऑल इण्डिया यू.टी.यू.सी. ने कड़ा विरोध किया है। संगठन के सर्वभारतीय अध्यक्ष कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती ने 17 अगस्त को जारी एक बयान में कहा कि कम्पनी की तालाबंदी समाप्ति की घोषणा के साथ प्रबंधन द्वारा इतने बड़े पैमाने पर मजदूरों का निष्कासन उनके रोजगार व रोजगार के अधिकार पर एक भीषण हमला है। सभी की माँग थी कि कम्पनी उद्योग परिसर में भयमुक्त व दबावमुक्त सामान्य वातावरण बनाया जाए ताकि शान्ति व सौहार्द कायम रहे। परन्तु अब कम्पनी की इस एकतरफा असंवैधानिक निर्मम व अन्यायपूर्ण कार्रवाई ने उल्टे श्रमिकों में आतंक बिठा दिया है। 18 जुलाई की दुखद घटना की निष्पक्ष जाँच किये बिना ही पुलिस की बन्दूकों के साये में प्रबन्धन ने आँख मूंद कर थोक भाव में छंटनी कर डाली। इसकी जितनी निन्दा की जाए उतनी ही कम है। प्रबन्धन प्राकृतिक न्याय व श्रम कानूनों को धता बता कर अपनी मनमानी शर्तों पर मजदूरों से काम लेने पर बजिद है। निष्कासन की यह सूची बढ़ने की पूरी-पूरी आशंकाएं हैं।

प्रबन्धन ने 'अच्छे बर्ताव' के उस कुख्यात शपथ-पत्र देने की शर्त को एक बार फिर मजदूरों पर थोपने की घोषणा भी की है जिसके खिलाफ सन 2000 से मारुति-सुजुकी के सभी प्लांटों के कर्मचारी प्रतिवाद करते आ रहे हैं। इस बहाने किसी भी श्रमिक का रोजगार बेवजह किसी भी समय छीनने की तलवार प्रबन्धन के हाथ में आ जाएगी। सिर्फ इतना ही नहीं, बल्कि नये सिरे से 100 बांउसरों की भर्ती की भी घोषणा की गई है। यह न केवल कानून-व्यवस्था के स्थापित नियमों के विरुद्ध है बल्कि उद्योग परिसर में शान्ति भंग करने का एक स्थायी कारक भी है। हम पुनः माँग करते हैं कि मजदूरों के खून-पसीने की कमाई पर जबरन पलने वाले इस संगठित अपराधी गिरोह रखने पर पाबन्दी लगाई जाए।

हम प्रदेश की हुड्डा सरकार से पुरजोर माँग करते हैं कि पुलिस की बन्दूकों के साये में श्रमिकों के साथ वह अन्याय करना बंद करे, 500 श्रमिकों का घोषित निष्कासन रद्द किया जाए और श्रमिकों पर आतंक-राज बिठाने की बजाय शान्ति व सौहार्द कायम करने की दिशा में उद्योग परिसर में भयमुक्त व दबावमुक्त सामान्य वातावरण बनाया जाए। श्रमिक यूनियन के पदाधिकारियों समेत जेल में बंद सभी निर्दोष श्रमिकों को रिहा किया जाए। समस्त घटना की उच्च स्तरीय न्यायिक जाँच कराके ही दोष का निर्धारण कराया जाए।

कोर्ट ने आरएसएस-बीजेपी के...

(पृष्ठ 1 का शेष)

हिन्दुत्व ब्रिगेड को चाहे जो भी सत्ता में रहा हो उसका अन्दरखाने समर्थन प्राप्त होता रहा है और एकतरफा हत्याओं सहित तमाम ऐसी जघन्य गतिविधियों के अपराधियों को दोष मुक्त ठहराने के लिए समन्वित प्रयास किया जा रहा है। जहाँ बीजेपी बहुसंख्यक हिन्दू वोट बैंक पर निशाना साध रही है वहीं कांग्रेस और अन्य पार्टियाँ विशुद्ध चुनावी नजरिए से अल्पसंख्यक वोटरों को लुभाने के लिए बीजेपी के विरोध का दिखावा कर रहे हैं और बेगुनाह पीड़ित आम लोग इसका बदतरीन शिकार बनते हैं। सच है कि अहमदाबाद कोर्ट ने कम से कम कुछ तथ्यों को सामने ला दिया है और दोषियों को सजा सुनाई है। हमें पक्का यकीन नहीं है, कहीं ये अपराधी प्रभावशाली गुटों द्वारा पर्दे के पीछे से किए जाने वालों प्रयासों की वजह से उच्च अदालतों में छूट न जाएं, जैसा कि बेस्ट बेकरी, गुलबर्गा सोसाइटी और अन्य मामलों में देखा गया है। सरकार-प्रशासन को कुछ कार्रवाई करने के लिए मजबूर करने का एकमात्र रास्ता है, ऐसी साम्प्रदायिक-जातिवादी उत्तेजना भड़काने का षड़यन्त्र रचने वालों के खिलाफ देशव्यापी जनप्रतिवाद को संगठित करना और जनचेतना को सचेत और सजग बनाए रखना।

जनआन्दोलन व वर्ग संघर्ष ही क्रान्तिकारी आन्दोलन व उसकी संस्कृति के बारे में जनता को शिक्षित करते हैं

केरल में कॉमरेड शिवदास घोष स्मृति सभा में कॉमरेड माणिक मुखर्जी

केरल के कोल्लम में 8 अगस्त को सर्वहारा के महान नेता, महान मार्क्सवादी दार्शनिक और चिन्तनकार इस देश की सरजमीन पर असल साम्यवादी पार्टी एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के संस्थापक महासचिव कॉमरेड शिवदास घोष के 36वें स्मृति दिवस के अवसर पर एक सभा आयोजित की गई। एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) पार्टी के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड माणिक मुखर्जी सभा के मुख्य वक्ता थे। अध्यक्षता केन्द्रीय कमेटी सदस्य और केरल राज्य सचिव कॉमरेड सी.के. लुकोस ने की।

कॉमरेड माणिक मुखर्जी ने अपने भाषण में कहा कि हमारे देश में गरीब लोग जिन्हें कहते हैं वे सड़कों पर पड़े सड़ रहे हैं। मुट्ठीभर कुछ लोग, उंगलियों पर गिनती के कुछ परिवार दुनिया के सबसे अमीर लोगों में शुम्मार हो गये हैं। यह बात दिन के उजाले की तरह साफ है कि एक समय का विकासशील भारत आज पूँजीवादी राष्ट्र के रूप में सिर्फ उन्नत हुआ है इतना ही नहीं बल्कि भारत ने आज साम्राज्यवादी चरित्र हासिल कर लिया है। आज का भारत पड़ोसी देशों के लिए परेशानी का सबब बन गया है। यह देश दूसरे देशों के कच्चे माल, प्राकृतिक सम्पदा एवं श्रमशक्ति के लुटेरे में तब्दील हो गया है। इस देश की सरजमीन पर भारतीय बुर्जुआ वर्ग के इस असल रूप को सर्वप्रथम कॉमरेड शिवदास घोष ने ही दिखाया था। सीपीएम, सीपीआई जैसी नकली वामपंथी पार्टियाँ अपनी कथित जनगणतांत्रिक क्रान्ति में पूँजीपतियों की प्रगतिशील भूमिका को आज भी खोज रही हैं। अत: स्वाधीनता के तुरन्त बाद ही कॉमरेड शिवदास घोष ने विज्ञान सम्मत रूप से दिखाया था कि भारतीय राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग के खिलाफ सम्पूर्ण रूप से न लड़ कर लोग पूँजीवादी शोषण से खुद की मुक्ति, देश की मुक्ति हासिल नहीं कर सकते हैं। सीपीआई इस देश में किसी असल कम्युनिस्ट नेता को जन्म नहीं दे सकी। बहुत से सीपीआई नेता-कार्यकर्ता इमानदार निष्ठावान, आदर्श के प्रति अविचल थे। उन्होंने कम्युनिस्ट बनना चाहा था। लेकिन क्रान्तिकारी होने के उद्देश्य से जिस सीपीआई को उन्होंने चुना था वह पार्टी लेनिन द्वारा दिखाए गए विज्ञान सम्मत रास्ते का अनुसरण करके निर्मित नहीं हुई थी। फलत: उनके कम्युनिस्ट बनने का सपना अधूरा ही रह गया। कॉमरेड शिवदास घोष जब इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि इस देश में कोई भी सही कम्युनिस्ट पार्टी नहीं है तब उन्होंने तमाम कठिनाइयों व बाधाओं का मुकाबला करते हुए एक सही कम्युनिस्ट पार्टी गठित करने के लिए एक कठोर-कठिन संघर्ष शुरू किया।

कॉमरेड माणिक मुखर्जी ने कहा, आज हमारी पार्टी इस देश में सर्वत्र फैल गई है। जम्मू-कश्मीर को छोड़ कर सभी राज्यों में हमारी युनिट स्थापित हो चुकी हैं। बहुत से राज्यों में जन आन्दोलन और वर्ग संघर्ष की शक्ति के रूप में पार्टी उभरकर आई है। दुनिया के विभिन्न देशों में भी सटीक कम्युनिस्ट पार्टी गठित करने का संघर्ष नए सिरे से जिन्होंने छेड़ा है, हमारी पार्टी का नाम, विशेषकर महान नेता हमारे शिक्षक, पथ-प्रदर्शक कॉमरेड शिवदास घोष का नाम आज विदेशों के उन सब कॉमरेडों के मन में है। वे शिकायत करते हैं कि आपने कॉमरेड शिवदास घोष के इस मूल्यवान चिन्तन से लैस लेखों को हमें पहले क्यों नहीं दिया? कॉमरेड माणिक मुखर्जी ने कहा कि साम्राज्यवाद-विरोधी आन्दोलन और इसके साथ-साथ दूसरी-दूसरी कम्युनिस्ट पार्टियों के साथ मेलजोल कायम करने के लिए हमारी तरफ से जितना काम करने की जरूरत थी वह हम नहीं कर पाये हैं। यह हमारी सीमाबद्धता है। लेकिन हमने शुरूआत कर दी है। इसलिए ऑस्ट्रेलिया को छोड़कर दुनिया के तमाम महाद्वीपों में हमारा सम्पर्क हुआ है। कॉमरेड शिवदास घोष की मूल्यवान शिक्षा को दुनिया के विभिन्न देशों के लोगों के पास, चाहे कुछ हद तक ही सही हम पहुँचा सके हैं। सोवियत यूनियन, चीन, पूर्वी यूरोप के तमाम देशों में प्रतिक्रान्ति के जरिए पूँजीवाद पुनर्स्थापित हुआ है। शुरू-शुरू में बहुत से कम्युनिस्टों के अन्दर इसको लेकर विभ्रान्ति और हताशा छाई हुई थी। आज फिर से असल कम्युनिस्ट कार्यकर्ता नए सिरे से कम्युनिस्ट पार्टी, नया आन्दोलन गठित करने का प्रयास कर रहे हैं। इस उद्देश्य

केरल में सभा से पहले विशाल जुलूस। (इनसेट में) कॉमरेड माणिक मुखर्जी भाषण देते हुए

को लेकर जो संघर्ष कर रहे हैं उनके अन्दर बहुत सी पार्टियों के सुविचारित मतानुसार शिवदास घोष की चिन्तनधारा है मार्क्सवाद-लेनिनवाद का विशेषीकृत मौलिक रूप। आज के समय में कॉमरेड शिवदास घोष की चिन्तनधारा को जाने बिना मार्क्सवाद-लेनिनवाद की सामयिक समझदारी संभव नहीं है। विशेषकर आधुनिक संशोधनवाद के चरित्र के सम्बन्ध में कॉमरेड शिवदास घोष ने जो गाइड लाइन प्रदान की है वह अनन्य है सिर्फ इतना ही नहीं बल्कि दुनिया के लिए कोई भी कम्युनिस्ट ऑथोरिटी इस विषय में कोई गाइड लाइन दे कर नहीं गई। इसीलिए कॉमरेड शिवदास घोष की चिन्तनधारा के विशेषीकृत रूप को समझे बिना मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सम्बन्ध में धारणा भी आंशिक रह जाएगी। मार्क्सवादी आन्दोलन के अन्दर आज संशोधनवाद ही सबसे बड़ी विपत्ति है। संशोधनवाद को परास्त किए बिना पूँजीवाद-साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष नहीं किया जा सकता है। इस विषय में समझदारी दिनोदिन उन्नत हो रही है। कॉमरेड शिवदास घोष ने इस विषय पर रास्ता दिखाया है। एक कम्युनिस्ट पार्टी के अन्दर भी किस तरह संशोधनवाद घर कर जाता है, नेतृत्व को किस प्रकार ग्रसित कर लेता है, संशोधनवाद का बीज किस तरह कम्युनिस्ट आन्दोलन के अन्दर जगह बना लेता है, इसे उन्होंने सुनिर्दिष्ट रूप से दिखाया था। उनकी शिक्षा थी–कम्युनिस्ट आन्दोलन की अग्रगति के अन्दर ही बुर्जुआ व्यक्तिवाद काम करते जाने के फलस्वरूप ही यह व्याधि पैदा हुई है। प्रतिक्रान्ति का यही मूल स्रोत है। इसलिए किसी भी कम्युनिस्ट पार्टी को अपने जन्म से ही पार्टी के भीतर संशोधनवाद के खिलाफ पूरी ताकत लगाकर संघर्ष करना होता है। लेकिन यदि कोई शपथ लेता है कि वह खुद के अन्दर व्यक्तिवाद की झौंक के खिलाफ लड़ेगा, इसी से ही क्या उसके लिए यह कार्य करना संभव है? कतई नहीं। कॉमरेड शिवदास घोष ने हमें सिखाया है कि जो सर्वहारा क्रान्तिकारी बनने का उद्देश्य लेकर आगे आ रहे हैं, इस आदर्श के लिए समर्पित होना चाह रहे हैं उन्हें अच्छी तरह समझना होगा कि हम एक ऐसा समाज निर्मित करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं जहाँ उत्पादन पर कोई भी व्यक्तिगत मालिकाना नहीं रहेगा। समाज से हर तरह के व्यक्ति-मालिकाने को खत्म कर देना ही हमारा लक्ष्य है। अत: जो इस क्रान्ति में नेतृत्व देंगे उन्हें सम्पत्तिबोध और व्यक्तिगत सम्पत्ति पर आधारित जो मानसिक ढाँचा है इससे पूरी तरह मुक्त होना होगा। व्यक्ति सम्पत्तिबोध को लेकर समस्त मानसिक जटिलता अर्थात् प्राइवेट प्रोपर्टी मेण्टल कॉम्पलेक्स से उन्हें पूरी तरह बाहर आना होगा। यह नहीं होने से वे क्रान्ति को नेतृत्व प्रदान नहीं कर सकेंगे।

एसयूसीआई(सी) पार्टी की स्थापना होने के समय से ही कॉमरेड शिवदास घोष ने सामूहिक जीवन पद्धति निर्मित करने पर जोर दिया था। वे कहते थे कि सामूहिक जीवन पद्धति निर्मित किये बिना सामूहिक चिन्तन पद्धति निर्मित नहीं हो सकेगी। जीवन को चौतरफा समेटे हुए इस चिन्तन पद्धति निर्मित किये बिना सामूहिक नेतृत्व निर्मित नहीं हो सकेगा। पार्टी के अन्दर इस सामूहिक चिन्तन को निर्मित किये बिना सामूहिक नेतृत्व निर्मित नहीं होगा। यह संघर्ष न करके केवलमात्र निष्ठा के दम पर चलने से ही हम प्राइवेट प्रोपर्टी मेण्टल कॉमप्लेक्स से मुक्त नहीं हो सकेंगे। यह कार्य नहीं होने से सामूहिक नेतृत्व की बजाए पार्टी में व्यक्ति-नेतृत्व कायम होगा। कॉमरेड घोष ने दिखाया था कि सामूहिक नेतृत्व अमूर्त नहीं होता है, पार्टी के तमाम नेतृत्वकारी कार्यकर्ताओं के जीवन के तमाम पहलुओं को समेटे हुए कठोर-कठिन समाजवादी संघर्ष के जरिए ही सामूहिक नेतृत्व पैदा होता है वरना नेतृत्व फार्मल अर्थात् औपचारिक हो जाता है। ऐसा होने से बुर्जुआ व्यक्तिवाद के चंगुल से हम मुक्त नहीं हो सकते हैं।

कॉमरेड शिवदास घोष की अमूल्य शिक्षा को दिखाते हुए कॉमरेड माणिक मुखर्जी ने कहा, किस प्रकार समझा जाए कि सामूहिक नेतृत्व कायम हुआ है? इसकी पड़ताल क्या है? इसकी पड़ताल होगी नैतिकता एवं संस्कृति के आधार पर। इस संघर्ष के जरिए सर्वहारा क्रान्ति की परिपूरक नई तरह की संस्कृति, नई तरह की नैतिकता निर्मित हुई है – यही देखने से समझना होगा सामूहिक नेतृत्व का सही रूप पैदा हुआ है। यह संघर्ष कठोर-कठिन तो है लेकिन असंभव नहीं है। कॉमरेड शिवदास घोष की यह शिक्षा मार्क्सवाद के ज्ञान भण्डार में एक अमूल्य संयोजन है। इस देश के मजदूर वर्ग ने, इस तरह के एक अग्रणी दार्शनिक, संगठक एवं सर्वहारा के महान नेता को जन्म दिया है – यह कहते हुए हम निश्चित ही गर्व महसूस करते हैं। इस गर्व का सही अर्थ क्या है? यह गर्व हमसे कहता है कि भारत को पूँजीवाद के नागपाश से मुक्त करने के लिए हमें अपनी पूरी ताकत लगा देनी होगी ताकि हम हमारे ऊपर आयद ऐतिहासिक जिम्मेदारी निभा सकें। भारत की क्रान्ति अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी क्रान्ति को रास्ता दिखा सकती है।

जनआन्दोलन के प्रसंग में उन्होंने कहा, हम जनसंघर्ष, वर्ग संघर्ष पर सबसे ज्यादा जोर देते हैं। यहाँ तक कि जब हम चुनाव में लड़ते हैं तब भी जनआन्दोलन के परिपूरक कार्यक्रम के रूप में ही लड़ते हैं। हम जनता को साफ कहते हैं कि चुनावों के जरिए किसी भी मौलिक समस्या का समाधान होना संभव नहीं है। इसके लिए क्रान्ति ही एकमात्र रास्ता है। कॉमरेड शिवदास घोष ने दिखाया था कि आम आदमी क्रान्ति को जनआन्दोलन और वर्ग संघर्ष के जरिए समझता है। इसीलिए जनआन्दोलन और वर्ग संघर्ष को स्कूल ऑफ कम्युनिज़्म कहा जाता है। क्रान्तिकारी आन्दोलन, उसकी नैतिकता, उसकी संस्कृति के बारे में जनता को शिक्षित करने का यही एकमात्र रास्ता है। इसी वजह से उन्होंने निरन्तर और दीर्घस्थाई जनआन्दोलन निर्मित करने के साथ-साथ जनकमेटी

(शेष पृष्ठ 7 पर)

कम्युनिस्ट आचरण विधि...

(पृष्ठ 2 का शेष)

उदाहरण के लिए, एक आदमी पूरे सुख और ऐशोआराम से अपने परिवार के साथ रह रहा था। वही आदमी स्वेच्छा से इस सबको पीछे छोड़ कर खुशी-खुशी किसी के नेतृत्व में इस संघर्ष में शामिल होने आया है। किसे देखकर वह आया होगा? उसने कहाँ से इसकी प्रेरणा ली होगी? क्या किसी के सिर्फ भाषणों को सुनकर वह आया है? निश्चित ही नहीं। वह नेताओं के उस जीवन-चरित्र को देखकर आया है जो जीवन चरित्र सचमुच ऐसा है कि झूठी कहानियाँ गढ़कर, निन्दा अभियान चलाकर और झूठा प्रचार करके भी उस चरित्र पर दाग नहीं लगाया जा सकता और न ही इसके आकर्षण को नष्ट किया जा सकता। ऐसे आदर्श नेताओं के बिना काम नहीं चलेगा। हमें रोजमर्रे के नियमित कामों के लिए हजारों-हजार नेताओं की जरूरत है। परन्तु ऐसे आदर्श नेता जैसे कि मैंने ऊपर बताए–अभी भी हमारे बीच बहुत कम संख्या में हैं। इसलिए नेता तो हमें चाहिएं ही मगर वे नहीं जो नेता बनने की सही प्रक्रिया को अपनाकर नहीं चल रहे हैं। जो नेता बनने की सही प्रक्रिया को नहीं अपनाते हैं वे खुद ही नेता बनने के अपने रास्ते में रुकावट पैदा कर देते हैं और कभी नेता नहीं बन पाते हैं।

कॉमरेडों की आचरण विधि पर विचार करते हुए एक और बात पर चर्चा होनी चाहिए। ऐसे भी कॉमरेड हैं जो अपने खुद के काम की जिम्मेदारी न निभाकर दूसरों के काम में ज्यादा टांग अड़ाते हैं। सभी अगर अपने काम को छोड़ करके दूसरों के काम की चिन्ता करना शुरू कर देंगे तो नतीजा क्या होगा? इस तरीके से कोई भी काम नहीं हो सकता है। इसलिए पहले सब अपने-अपने काम को पूरा करें और अपना काम निपटाने के बाद अगर कोई और बड़ी जिम्मेदारी अपने कन्धों पर लेता है तो यह बहुत अच्छा है। केवल इसी तरह व्यक्तिगत और सामूहिक तौर पर काम करना सम्भव बनता है। बिना कोई बहाना बनाए जो अपनी जिम्मेदारी निभाता है वही सामूहिक काम में ज्यादा योगदान कर सकता है। 'सामूहिकता' की धारणा इसलिए नहीं बनी कि कोई अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारी को न निभाए। व्यक्तिगत पहलकदमी और व्यक्तिगत दायित्व के पालन को एक विशेष पद्धति से संयोजित करके ही सामूहिकता आती है। यह सामूहिकता हरेक की व्यक्तिगत पहलकदमी और व्यक्तिगत जिम्मेदारी निभाने के योगफल से भी कहीं ज्यादा विकसित चीज होती है, ज्यादा शक्तिशाली होती है। यही 'सामूहिक' काम फिर हरेक को रास्ता दिखाएगा और व्यक्तिगत कामों में और अधिक दक्षता हासिल करने में मदद रकेगा। इसी का नाम है 'सामूहिक'। अत: हम देखते हैं कि प्रत्येक की व्यक्तिगत पहलकदमी के बिना 'सामूहिक' केवल एक खोखला शब्द ही रह जाता है और काम न करने या जिम्मेदारी से जी चुराने का केवल एक बहाना मात्र है।

फिर ऐसे भी कुछ कॉमरेड हैं जिन्हें अगर आप पूछें कि काम क्यों नहीं हो रहा है तो अनेक बहाने गढ़ लेते हैं। वे कहेंगे कि यह नहीं हुआ–वह नहीं हुआ, दफ्तर से निर्देश या सर्कुलर नहीं मिला या ऐसा ही कोई अन्य बहाना बना देंगे। निश्चय ही यह बात सच है कि अगर कॉमरेडों को समय पर निर्देश या सर्कुलर नहीं मिल पाते हैं तो उसमें नेतृत्व पक्ष की गलती हैं। परन्तु सिर्फ इसीलिए उनके निठल्ले बैठे रहने, काम में कोताही बरतने या महज गप्पे मारने की क्या तुक है? बल्कि एक काम जिसे न करने से पार्टी का नुकसान होगा, सर्कुलर का इन्तजार न करके अगर खुद ही वह उसे कर लेता है और फिर आकर यह बात नेतृत्व को दिखाने में मदद करता है कि यह दफ्तर की भूल थी तो वह वास्तव में नेतृत्व को त्रुटिहीन बनाने में कारगर ढंग से मदद कर सकता है और नए कॉमरेडों को भी प्रेरणा दे सकता है। लेकिन हम अनेक कॉमरेडों में इसका अभाव देखते हैं। यहाँ तक कि रोजमर्रे का सामान्य काम भी बाकी पड़ा रहता है। पूछने पर कहेंगे कि हिदायत नहीं मिली या दफ्तर से यह नहीं मिला, वह नही मिला–इसलिए वे कर नहीं पाए। लेकिन नेताओं को हजारों-हजार कॉमरेडों के लिए रोजाना के काम खोज निकालने पड़ें और रोजाना योजना बनाकर बतानी पड़ें तो हम और भी मुश्किल में पड़ जाएंगे–यह असम्भव काम है। एक होती है पार्टी की आम दिशा, यानी किस तरह से काम करना होगा, किस प्रकार से प्रचार चलाना होगा और हमारे क्या कार्यक्रम और नीतियाँ हैं इन सभी के बारे में उन्हें पहले ही बता दिया गया है। अब कॉमरेडों का काम है व्यक्तिगत पहलकदमी करना और उन पार्टी नीतियों के अनुसार रोजाना अपने लिए काम तलाश कर लेना, जन-सम्पर्क करना और कार्यक्रम की योजना बना लेना और कार्यक्रम लेना। यह हर कॉमरेड की निजी पहलकदमी का हिस्सा है। लेकिन जब किसी खास कॉमरेड में इसका भी बिल्कुल अभाव पाया जाता है तो हो सकता है कि नेताओं की ओर से उसके लिए एकदम रोजाना के काम की तफसील के साथ योजना तक बनानी पड़ सकती है। हालांकि, मैं समझता हूँ कि ऐसा करना हमेशा उचित नहीं है क्योंकि आखिरकार इसका नतीजा अच्छा नहीं निकलता है। यह कॉमरेडों की निजी पहलकदमी, सोचने की क्षमता और कल्पना-शक्ति को पंगु बना देता है। आचरण-विधि के और भी बहुत सारे पहलू हैं जिन पर चर्चा होनी चाहिए। लेकिन एक ही व्याख्यान में उन सब पर विचार नहीं किया जा सकता। भविष्य में अन्य किसी व्याख्यान में इस विषय पर मैं और अधिक चर्चा करने की कोशिश करूँगा। आज यहीं समाप्त करता हूँ।

कॉ. चक्रवर्ती का भाषण...

(पृष्ठ 4 का शेष)

में संगठित हों। ऐसा होने से पहले हाथ में हथियार उठा लेना क्रान्ति नहीं बल्कि क्रान्ति को नुकसान पहुँचाना होगा। कॉमरेड शिवदास घोष ने हमारी पार्टी को यही शिक्षा दी है। जब तक यह परिस्थिति पैदा नहीं हो जाती है तब तक जनता की विभिन्न समस्याओं को लेकर उन्नत चिन्तन और संस्कृति के आधार पर न्यायसंगत जनतांत्रिक आन्दोलन एक के बाद एक करते जाने होंगे। कॉमरेड शिवदास घोष के चिन्तन के आधार पर यही शिक्षा पार्टी ने हमें दी है। पूरे देश के अन्दर इसी चिन्तन के आधार पर एक नए आन्दोलन का जन्म हो रहा है। विगत 14 मार्च को दिल्ली में जो गए थे वे देख कर आए हैं कि केरल, तमिलनाडू से पंजाब तक, उत्तर भारत से लेकर दक्षिण भारत तक, महाराष्ट्र, गुजरात से लेकर आसाम, त्रिपुरा तक सभी राज्यों के कॉमरेड और जनसाधारण वहाँ इकट्ठे हुए थे। एसयूसीआई(सी) पार्टी के आह्वान पर उस दिन दिल्ली में एकताबद्ध आन्दोलन में हिस्सा लिया था। कष्ट सहिष्णुता में, अनुशासन में जिस उन्नत संस्कृति की मिसाल उन्होंने पेश की वही इस आन्दोलन को आगे ले जाएगी।

इसके जरिए ही महान चरित्रों का निर्माण होता है। इस नई मार्क्सवादी चिन्तन-चेतना से प्रेरित हो कर युवा समाज को आगे आना होगा और तभी एक नई सभ्यता, नई संस्कृति विकसित होगी, एक नई समाजव्यवस्था का मार्ग प्रशस्त हो जाएगा। कॉमरेड शिवदास घोष ने मार्क्सवाद के आधार पर भारत की विशेष परिस्थिति की व्याख्या करके यह दिखाया था। आज हमारा समाज मुक्ति वेदना से छटपटा रहा है। आज भारतीय समाज संकटग्रस्त है। इसकी मुक्ति चाहिए। अभाव, बेरोजगारी, कुसंस्कृति ने समाज को दबोच रखा है। जिन्दा रहना ही लगभग असंभव हो गया है। पुत्र पिता की हत्या कर रहा है, माँ गरीबी की वजह से संतान को बेच रही है। आत्महत्या तो रोजमर्रा की घटना हो गई है। मनुष्य आत्महत्या कब करता है? जब जिन्दा रहना असंभव हो जाता है। बात ऐसी नहीं है कि सिर्फ किसान ही आत्महत्या कर रहे हैं। युवक, छात्र-छात्राएं भी हताशाग्रस्त होकर आत्महत्याएं कर रहे हैं। इनको रोकना है तो एक ही रास्ता खुला है। वह है आन्दोलन का रास्ता, संघर्ष का रास्ता, क्रान्ति का रास्ता, जो रास्ता कॉमरेड शिवदास घोष दिखा कर गए हैं। इस सभा में नौजवान काफी संख्या में मौजूद हैं। मैं बहुत ही खुशी हुआ हूँ। मैं उम्मीद करता हूँ कि जिसकी चर्चा मैंने की है उस उन्नत संस्कृति को हासिल करने के लिए आप संघर्ष करेंगे। आसाम में एक नई संस्कृति को जन्म देने के लिए आन्दोलन में आसाम के युवक-युवतियों, लड़के-लड़कियों को शामिल कराने के लिए आप संघर्ष कीजिए। पूँजीवाद भयंकर रूप से संकटग्रस्त है लेकिन यह खुद-ब-खुद नहीं जाएगा। इसे जोरदार धक्का देना होगा। लेकिन कौन देगा? यदि जनता सचेत रूप से संगठित न हो तो कौन इसको उखाड़ फेंकेगा? मैं आपसे हार्दिक अनुरोध करता हूँ–आप लोग क्रान्ति के रास्ते पर आगे आइए। कॉमरेड शिवदास घोष के दिखाए रास्ते पर आगे बढ़िए तभी क्रान्ति होगी।

कॉ. माणिक मुखर्जी का भाषण...

(पृष्ठ 6 का शेष)

निर्मित करने पर भी अत्यन्त महत्व दिया था। वे कहते थे कि इन जनकमेटियों को इस तरह परिचालित करना होगा कि इनके जरिए जनता अपने आन्दोलन को खुद ही नेतृत्व देने में सक्षम हो जाए। ऐसी राजनैतिक जागरूकता पैदा कर पाने से इसके जरिए तैयार हो सकेगा जनता का अपना राजनैतिक हथियार। जनता को इस स्तर तक उन्नत कर पाने से सोवियतों की तरह हमारे देश में भी जनता के राजनैतिक संघर्ष की शक्ति निर्मित की जा सकती है। जनता को समझाना होगा इसके जरिए वे खुद ही खुद के संचालक खुद-मुख्तियार हो सकते हैं। इस बुर्जुआ राजसत्ता को ध्वस्त करके जनता के हाथों में समस्त सत्ता सौंप देने का यही एकमात्र रास्ता है। हमारी पार्टी इस केरल राज्य सहित भारत के विभिन्न प्रदेशों में इसी रास्ते पर जनकमेटी निर्मित कर एक के बाद एक जनआन्दोलन निर्मित कर रही हैं। आन्दोलन की भरोसेमन्द ताकत के रूप में लोग हमें श्रद्धा की नजर से देखते हैं।

महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष अपनी मृत्यु से पहले कह गए थे कि विश्व क्रान्ति की वास्तविक परिस्थिति तैयार है। जरूरत है तो सिर्फ इसके परिपूरक भावगत शर्त के रूप में सही कम्युनिस्ट पार्टी का आवश्यक सांगठनिक शक्ति लेकर उभर कर आना। इसी समय दुनिया के कई एक देशों में इस तरह की पार्टियाँ निर्मित भी हुई हैं। अभाव है उनकी आवश्यक सांगठनिक शक्ति का। हमारे देश में भी परिस्थिति यही है। जरूरत है सही कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में लगातार आन्दोलन और जनकमेटियाँ निर्मित करते करते तेजी से शक्ति अर्जित करना। कॉमरेड माणिक मुखर्जी ने जोर देकर कहा, हमारे आन्दोलनों के जरिए हम भारी संख्या में परोक्ष समर्थक तैयार कर सके हैं। लेकिन हम आज भी उनके परिवार के ही एक आदमी नहीं बन पाये हैं। हम उनसे इस प्रकार मिलना नहीं सीख रहे हैं। हमारे कॉमरेड मूलत: रोजमर्रा के विभिन्न टैकनिकल काम लेकर ही व्यस्त रहते हैं। नेतृत्व को देखना होगा कि कॉमरेड्स प्रतिदिन कुछ सामान्य गरीब परिवारों में जायें। उनके आत्मीय बनने का प्रयास करते हैं। इस तरह का गहरा रिश्ता उनके साथ कायम करना होगा कि वे आपका इंतजार करते रहते हैं। जिनके साथ कोई भी खून का रिश्ता नहीं उनके भी असल आत्मीय हो सकने के अन्दर ही इम्पर्सनल होने का संघर्ष है। इसके जरिए दो काम होंगे, प्रथमत: ये लोग क्रान्तिकारी आन्दोलन की ओर आकर्षित होंगे और द्वितीयत: इसके जरिऐ कॉमरेड्स खुद भी निकृष्ट व्यक्तिवाद से मुक्त होने के संघर्ष में आगे बढ़ सकेंगे।

अन्त में कॉमरेड माणिक मुखर्जी ने कहा कि साम्राज्यवाद के सरगना अमेरिका में 'वॉल स्ट्रीट दखल करो' आन्दोलन हो रहा है। एक समय सोचा गया था क्रान्ति शुरू होगी तीसरी दुनिया के गरीब मुल्कों से। लेकिन देखा जा रहा है कि क्रान्ति की आहट सुनाई दे रही है धनी पहली दुनिया के विभिन्न देशों में यहाँ तक कि अमेरिका की सरजमीन पर भी। सिर्फ जरूरत है उस देश की सरजमीन पर एक असल कम्युनिस्ट पार्टी की। वे हमें बुला रहे हैं, कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षा को सुनना चाह रहे हैं। नब्बे के दशक में पूरी दुनिया में समाजवादी खेमे के ढह जाने के बाद मेहनतकश लोगों में पैदा हुई हताशा के दिन आज अतीत की बात हो गई है। पूँजीवादी व्यवस्था असल में लड़खड़ा रही है। अमेरिका, यूरोप में नारा उठ रहा है : यह पूँजीवादी व्यवस्था हम नहीं चाहते हैं। हम चाहते हैं समाजवाद। हमारा देश भी इसका अपवाद नहीं है। कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षा को आधार बनाकर जितना ज्यादा जनसंघर्ष व वर्ग संघर्ष हम निर्मित कर सकेंगे उतना ही क्रान्ति का समय नजदीक आता जाएगा। अन्तिम और चरम संघर्ष के लिए हमें लोगों को संगठित करने के काम में कूद पड़ना होगा, हमे मिली है कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षा और उनके हाथों निर्मित पार्टी एसयूसीआई(कम्युनिस्ट)। इसीलिए कॉमरेड्स परिस्थिति का असल तात्पर्य समझकर इस संघर्ष में आगे आएं। महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष की क्रान्तिकारी स्मृति के प्रति श्रद्धांजली देने का यही सही रास्ता है।

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2012-2014
Posting at IPMBC on 7–8 and 22–23 Fortnightly , Date of Printing : 5 September, 2012

सर्वहारा दृष्टिकोण

7 से 21 जनवरी, 2012

असम में हालात को सामान्य बनाने के लिए केन्द्र व राज्य सरकारें तत्पर हों

पूर्वोत्तर के लोगों के पलायन पर एस.यू.सी.आई. (कम्युनिस्ट) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने 19 अगस्त को जारी बयान में कहा :

महाराष्ट्र व दक्षिणी भारत के राज्यों में पूर्वोत्तर भारत के राज्यों के रोजगार करने वाले आम लोगों व पढ़ने वाले विद्यार्थियों द्वारा अपनी सुरक्षा व बचाव के प्रति डर-भय की भावना से ग्रस्त होकर अपने-अपने घरों को वापस पलायन करने की घटनाओं पर एस.यू.सी.आई. (कम्युनिस्ट) गहरी चिन्ता प्रकट करती है। यह गम्भीर स्थिति उस साम्प्रदायिक-नस्ली दंगे-फसाद की आग की क्रिया-प्रतिक्रिया की उपज है जो आसाम के बोड़ोलैण्ड जिलों में घोर अराजकतावादी और साम्प्रदायिक ताकतों द्वारा फैलाई गई है। इन घटनाओं की अभी तक भी पूरी तरह से रोकथाम नहीं हो पाई है क्योंकि केन्द्र व राज्य सरकारें दोनों ही तत्परता से इन पर काबू पाने के लिए सख्ती से निपटने में बिल्कुल नाकाम रही हैं।

हमारा दृढ़तापूर्वक मानना है कि सभी प्रभावित क्षेत्रों में सामान्य स्थिति को बहाल करने के लिए साम्प्रदायिक ताकतों से कड़ाई से निपटना चाहिए जो फूटपरस्त भावनाओं को भड़का कर लोगों को एक दूसरे से लड़ा रही हैं। दंगा-पीड़ित क्षेत्रों के जो लोग बेघर हो गये हैं और अब अस्थायी शिविरों में बेहद दयनीय हालत में रहने को मजबूर हैं, उनकी जल्द से जल्द सुरक्षित वापसी सुनिश्चित की जानी चाहिए। यही वक्त का तकाजा है।

केन्द्र व सम्बन्धित राज्यों की सरकारों को तुरन्त ऐसा उपयुक्त माहौल बनाने के लिए भरसक प्रयास करने चाहिएं ताकि पूर्वोत्तर के डरे हुए विद्यार्थी व कामकाजी लोग दूसरे-दूसरे राज्यों में अपने-अपने कार्यस्थलों पर वापस लौट आ सकें। उनके रोजगार व अध्ययन को बिना किसी बाधा के जारी रखने की गारण्टी दी जानी चाहिए।

महिलाओं ने तोड़ी धारा 144

पटना: 30 अगस्त को डाक बंगला चौराहे पर महिलाओं के चेहरे पर गर्व और उत्साहपूर्ण हाव-भाव स्पष्टत: दृष्टिगोचर हो रहे थे जब वे धारा 144 तोड़कर हड़ताली मोड़ की तरफ आगे बढ़ रही थीं। प्रदर्शनकारी महिलाओं के हाव-भाव राज्य में तेजी से बढ़ती बलात्कार, अपहरण और हत्या की घटनाओं तथा पुलिस-प्रशासन की निष्क्रियता के खिलाफ उनके गुस्से को प्रतिबिम्बित कर रहे थे। महिला अत्याचार-विराधी संघर्ष मोर्चा के बैनर तले राज्य के विभिन्न हिस्सों से हजारों की तादाद में आयीं महिलाओं का सुसज्जित जुलूस ऐतिहासिक गांधी मैदान से चला। हड़ताली मोड़ पहुंचने पर पुलिस द्वारा जुलूस को रोक दिये जाने से जुलूस एक बड़ी सभा में तब्दील हो गया।

हड़ताली मोड़ पर महिलाओं की विशाल सभा को संबोधित करते हुए ऑल इंडिया महिला सांस्कृतिक संगठन की बिहार राज्य सचिव कॉ. साधना मिश्रा ने कहा कि नीतीश कुमार के शासन में महिलाओं के साथ बलात्कार, अपहरण और हत्या की घटनाओं में तेजी से इजाफा हो रहा है। अपराधियों और दबंगों द्वारा अपराध नित्य की घटना बन चुकी है। राजस्व उगाही के नाम पर सार्वजनिक स्थानों पर शराब की दुकानों का खुलना आग में घी का काम कर रहा है। उन्होंने कहा कि राजस्व उगाही के नाम पर नीतीश सरकार महिलाओं की अस्मिता पर हमले कर रही है।

कंचनबाला, अनामिका, रामपरी देवी, शरत्, शिवानी और निवेदिता ने भी सभा को संबोधित किया। सभी वक्ताओं ने नीतीश सरकार को पूरी तरह से जनविरोधी बताते हुए आम तौर पर राज्य की जनता से तथा खास तौर पर महिलाओं से आगे आने और महिलाओं की अस्मिता पर हमले के खिलाफ दीर्घस्थायी ताकतवर आंदोलन निर्मित करने की अपील की।

महिलाओं पर बढ़ते जुल्म, अत्याचार के खिलाफ कार्यशाला

कार्यशाला में महिलाओं को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड रबीन समाजपति

जमशेदपुर (झारखण्ड) : महिलाओं पर बढ़ते अपराधों की घटनाओं की रोकथाम के उपायों को लेकर ऑल इंडिया महिला सांस्कृतिक संगठन (एआईएमएसएस) की पूर्वी सिंहभूम जिला कमिटी की ओर से 26 अगस्त को जमशेदपुर के इनफॉरमेशन सेंटर में एक कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला का शुभारंभ 'हम भारत की बेटी हैं' गीत से किया गया। कार्यशाला में जिले के विभिन्न प्रखंडों से महिलाएं आयी थीं। इसमें दहेज उत्पीड़न, बलात्कार, यौन शोषण, घरेलू हिंसा, नारी भ्रूण हत्या, धड़ल्ले से शराब की दुकानों के दिये जा रहे लाइसेंस, शराब के कारण महिलाओं पर बढ़ते अत्याचार-अपराधों की कई घटनाओं का जिक्र किया गया। यह भी कहा गया कि इन घटनाओं के बाद पुलिस थाने में रिपोर्ट दर्ज करने के लिए जाने पर वहां पर एफआईआर नहीं लिखी जाती है, उल्टे महिलाओं को ही अपमानित किया जाता है। ऐसे हालात में महिलाओं के सामने रास्ता क्या है? भूमंडलीकरण का महिलाओं पर क्या असर पड़ा है? इन सवालों का जवाब कार्यशाला में उपस्थित विशेषज्ञों ने दिया। कार्यशाला में बतौर विशेषज्ञ महिला सेल की अध्यक्ष अंजली बोस, मानवाधिकार संगठन पीयूसीएल के झारखंड राज्याध्यक्ष निशांत अखिलेश, जानेमाने अधिवक्ता रतन चक्रवर्ती, राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षिका ज्योत्सना अस्थाना, ए.आई.एम.एस.एस. की राज्य सचिव केया डे उपस्थित थीं। कार्यशाला में महिलाओं के कानूनी अधिकार, नारी आंदोलन की दिशा पर विस्तार से चर्चा हुई। सभा की अध्यक्षता संगठन की राज्य अध्यक्ष सरला महतो ने की और सभा का संचालन संगठन की जिला सचिव चंदना बनर्जी ने किया।

अंत में एस.यू.सी.आई (कम्युनिस्ट) के झारखंड राज्य सचिव कॉमरेड रबीन समाजपति ने बतौर मुख्य वक्ता कहा कि नारी हमेशा से ऐसी स्थिति में नहीं रही है। समाज विकास के एक विशेष स्तर पर आकर वह पुरुषों के अधीन हुई। गैर-बराबरी व शोषण पर आधारित यह समाज व्यवस्था ही नारी की इस स्थिति के लिए जिम्मेवार है। जब एक शोषणहीन समाज बनेगा, तभी नारी को मुक्ति मिल सकती है। इसलिए नारी मुक्ति आंदोलन को शोषणमुक्ति आंदोलन से जोड़ना जरूरी है और साथ ही साथ संग्रामी नारियों का संगठन, हर मुहल्ले में कमिटी बनाने की आवश्यकता है।

एआईयूटीयूसी ने प्रवासी मजदूरों पर हमले की निन्दा की

बैंगलोर (कर्नाटक): ऑल इण्डिया यूनाइटिड ट्रेड यूनियन सेण्टर (एआईयूटीयूसी) की कर्नाटक राज्य कमेटी ने 31 अगस्त 2012 को जारी एक बयान में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं द्वारा प्रवासी मजदूरों पर किए गए क्रूर हमले की तीव्र निन्दा की है। ज्यादातर भारत के पूर्वी हिस्सों से आए प्रवासी मजदूरों को बंगलादेशी करार देते हुए उन पर यह हमला कन्नूर जा रही ट्रेन में मांड्या के पास एबीवीपी कार्यकर्तायों द्वारा किया गया। तमाम 98 अभागे असहाय मजदूरों पर हमला किया गया और मांड्या स्टेशन पर जबरदस्ती ट्रेन से उतार दिया गया तथा बैंगलोर भेज दिया गया। यह साफ है कि एक तरह भाजपा राज्य सरकार गहन चुप्पी साध लेती है जब भाड़े के गुण्डे बेकसूर लोगों पर या तो धर्म के नाम पर नहीं तो क्षेत्र के नाम पर हमला करते हैं या जब वे नैतिक दरोगागिरी करते हैं, जैसा कि हाल ही में मैंगलोर में कॉलेज छात्रों पर हुए हमले के दौरान देखा गया फिर दूसरी तरफ यह उत्पीड़ित लोगों की जान-माल का रक्षक होने का दिखावा भी करती है।

ज्यादातर भारत के पूर्वी हिस्से के इन लोगों पर यह हमला ऐसे एक समय पर हुआ है जब हाल ही में पूर्वोत्तर के लोग कर्नाटक से भारी संख्या में पलायन कर रहे हैं और यह उन लोगों के राज्य में वापस आने के लिए सद्भावनापूर्ण वातावरण बनाने के तथाकथित सरकारी 'प्रयासों' का मखौल उड़ाता है। जब संघ परिवार के सदस्यों द्वारा ऐसे हमलों को अंजाम दिया जाता है तो राज्य में पूर्णत: अराजकता का बोलबाला हो जाता है।

हम सरकार से माँग करते हैं कि गरीब मजदूर जो इस देश के प्रामाणिक नागरिक हैं उन पर हमला करने वालों के खिलाफ तुरन्त उदाहरणमूलक कार्रवाई की जाए। हम यह भी मांग करते हैं कि हमले में घायल हुए लोगों को उचित मुआवज़ा देने के साथ-साथ मजदूरी गवांने की वजह से जो आर्थिक नुकसान हुआ है उसकी भरपाई की जाए।

मिड डे मील कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन कर ज्ञापन सौंपा

भिवानी : 25 अगस्त को मिड डे मील कार्यकर्ता यूनियन सम्बन्धित एआईयूटीयूसी के बैनर तले मिड डे मील कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किया और उपायुक्त जिला भिवानी की मार्फत मुख्यमंत्री के नाम 7 सूत्री मांगों का ज्ञापन सौंपा। प्रदर्शनकारी लघु सचिवालय गेट पर पहुंची। वहां हुई सभा को एआईयूटीयूसी के कॉ. रामफल, राजकुमार व धर्मवीर सिंह ने सम्बोधित किया। ज्ञापन में मिड डे मील कार्यकर्ताओं को 7000 रु. मासिक मानदेय देने, सरकारी कर्मचारी का दर्जा देने, हाजिरी रजिस्टर लगाने, सामाजिक सुरक्षा प्रदान करनें, साल में कम से कम दो वर्दियां देनें, बीमार पडने पर सवेतन अवकाश, मुफ्त इलाज व आर्थिक सहायता और मौत होने पर परिवार को उचित मुआवजा देने, हर जगह रसोई घर में सुरक्षा व गैस सिलेण्डरों व अन्य जरूरी चीजों का प्रबंध करने की मांग की।

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया की ओर से कॉ. गिरिजेश्वर सिंह द्वारा 3ए/38, डब्ल्यू.ई.ए., करोल बाग, नई दिल्ली-5 से संपादित व प्रकाशित तथा परम्परा प्रिंटिंग प्रेस, बी-70/83, इण्डस्ट्रियल एरिया, लॉरेंस रोड, दिल्ली-35 से मुद्रित, दूरभाष: 011-25726631, E-mail: sarvaharadrishtikon@yahoo.com